ब्रजविलाससारावली

जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के जन्मसे भँवरगीत पर्य्यन्त की कथा संक्षेप रीतिसे सरल दोहों में वर्णित है ॥

जिसको

श्रीमान् भार्गववंशावतंश ईश्वरीप्रसादसिंहजी के आत्मज गोवर्द्धनदासजीने निर्म्माण किया ॥

वही

सम्पूर्ण श्रीकृष्णानुरागियों के उपकारार्थ लखनऊ में छपी थी अब

हली बार

स्थान कानपुर

मुंशीनवलकिशोर (सी॰ आई॰) के छापेखानेमें छपी।

नवम्बर सन् ८९८ ई०

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ

ब्रजविलाससारावली ॥

मंगलाचरण ॥

जय जय श्रीवल्लभ प्रभू जय जय श्रीनँदलाल ॥
जय जय श्रीरुक्मिणि रमण विठ्ठलनाथ दयाल १
जयजय श्रीरवि नन्दिनी सकलसुखन की रास ॥
दीनदयाल कृपालु चित निजजन पूरण आस २
वन्दौं चरण सरोज रज महिमा सुखद अनन्त ॥
सदा कृपालु कृपालु चित जे जन हरि के सन्त ३
श्री ब्रजवासीदास जू मोतन होउ दयाल ॥
मनबांछित पुरवहु सकल वाणी प्रकट रसाल ४
ब्रजविलास ब्रजराज को सकल सार को सार ॥
ललितकाव्यतुमकृतविदितकथाअमितविस्तार ५
रचौं ग्रन्थ सारावली ब्रजविलास को सार ॥
सुन्दर यश गोपाल को भक्तन प्राण अधार ६
गुण गाये गोपाल के वाणी होय पुनीत ॥

भक्ति बसे उर अघ नशे कृष्ण भजन परतीत ७
जे हरिजन यहि देखि हैं वन्दौं शीश नवाय ॥
और दोष नहिं मन धरैं पठन करैं चित लाय ८
हरिजन गाहक गुणन के सो गुण हरि गुण गान ॥
हरि गुण रहित बखानिये सबही ऐगुण खान ९
दूसर वंश जन्म लियो भयो गोवर्द्धनदास ॥
पुत्र ईश्वरीसिंह को ग्राम भोयड़े वास १०

अथ कथा प्रसंग.

नारद आगमन. पृथ्वी पुकार.

श्रीदेवकि देवक सुता ब्याह दई वसुदेव ॥
रथ चढ़ि पहुँचावन चल्यो कंस राव करि हेव ११
देवकी को सुत आठवों होय कंस को काल ॥
सुनि वाणी आकाश की नृप जिय शोच विशाल १२
प्रथम पुत्र वसुदेव तन क्षमा दृष्टि नृप हेर ॥
कियो न कछु अपराध इन दियो पिता को फेर १३
भयो ऋषी को आगमन खैंची आठ लकीर ॥
भ्रमित कंस भावी प्रबल विकल रह्यो नहिं धीर १४
करि अगोठ राखे दोऊ षट सुत डारे मार ॥
दुखित भूमि भइ पाप तें हरि पै जाय पुकार १५
तब कृपाल जन के सुखद भूमि उतारन भार ॥
कियो बोध सब सुरन को कह्यो धरन अवतार १६

श्रीकृष्ण को जन्म. गोकुल को गमन. जन्म उत्सव ॥

जन्म लियो हरि मधुपुरी दरश मातु पितु दीन ॥
नन्द यशोमति हेत बसि गोकुल गमन जो कीन १७
भयो जन्म उत्सव तहाँ गाये मंगलचार ॥
नन्द धाम आनन्द नित सुखमा बढ़ी अपार १८

पूतना. कागासुर. शकटासुर. तृणावर्त्त वध॥

पय पीवत नँदलाल ने हने पूतना प्रान ॥
स्वर्ग्ग पठाई राक्षसी जननी गति पहिचान १९
कागासुर लै श्याम ने फेंक्यो कराठ मरोर ॥
पर्‌यो जाय नृप कंस ढिग कह्यो काल है तोर २०
पग अँगुठा सुख मेलि के पलना खेलैं श्याम ॥
शकट गिरायो चरण ते कियो दनुज को काम २१
तृणावर्त्त मार्‌यो असुर पटक शिला पर दीन ॥
अन्धधुन्ध सब दूरि करि ब्रज को दुख हरि लीन २२

अन्नप्राशन. नामकरण. वर्षगाँठ. ब्राह्मणपाक. चंदखिलौना.

धर्‌यो दिवस शुभ सोधि के बूझ्यो बिप्र बुलाय ॥
कीनों अन्नप्राशना जाति कुटुम्ब जिमाय २३
गोकुल आये गर्ग्ग मुनि नामकरण बलदेव ॥
देखि रूप हरिदेव को बरणो सबहीं भेव २४
प्रकट सुनायो जगत में अमित हैं इन के नाम ॥
कृष्ण कृष्ण सुमिरें सदा सब विधि पूरण काम २५

वर्ष गाँठि करि लालकी फूली यशुमति माय॥
बोलिसकल ब्रजवधुन को मंगल गान कराय २६
पाँड़े रुचि सों पाक करि परस धस्यो जब थार।
भोग धस्यो हरि हेत ही खायो नन्द कुमार २७
चन्द खिलोना लेन कूं मचिले गोकुल चन्द॥
बिरुझाने भये नींद वश पुनि चौंके नंदनन्द २८

कथापुरातन. कनछेदन. माटीखान. शालग्राम
अन्हवावन लीला॥

जननि सुवावति लाल कूं कथा अवधपुरि गाय।
देत हुँकारी लाड़िलो हिरदय हर्ष बढ़ाय २९
नख शिख कथा विवाह प्रति अरु वनवास बखान
श्याम चौंकि माँग्यो धनुष सुन्यो हरश सियकान ३०
वेद न पावैं भेद कूं नेति नेति करि गान॥
नन्द भवन में बैठ सो प्रकट छिदावैं कान ३१
खेल करत श्री मुख धरी माटी मोहन लाल॥
वदन उघार दिखाय पुनि स्वर्ग धररिा पाताल ३२
बैठे नन्द समाधि करि हरि पद लाये ध्यान॥
तिनके ठाकुर मेलि मुख बैठे श्याम चुपान ३३
ध्यान विसर्जन नन्द करि खोजे शालिग्राम॥
दिये नन्द के हाथ में करि चरित्र अभिराम ३४
अन्हवावन यशुमति कह्यो सुनि मचले घनश्याम

लखि उबटन डर तप्त जल लोटन लागे धाम ३५

खेलन समय. माखन चोरी. यमलार्जुन उद्धार.
वृन्दावन वास॥

नँद नन्दन मोहन मदन भये आप इक ओर॥
बलदाऊ ठाढ़े भये सम्मुख दूजी ठौर ३६
सखा वृन्द लै बाट ही रच्यो खेल मन मान॥
अपनी अपनी घात करि मारि बटा चौगान ३७
जाके गुण आगार अगम अति निगम न पावत ओर
सो प्रभु खेलत ग्वाल सँग बँधे प्रेम की डोर ३८
अधिक रसीली रस भरी लीला सुख की सार।
माखन चोरी घरन घर कौतुक नन्दकुमार ३९
नित उठि लावैं उरहनो गोबर्द्धन ब्रज नार॥
यशुमति सुनि नँदलाल कूं बर्जत बारम्बार ४०
धनद सुवन उद्धार हित उदर बँधायो दाम॥
कियो विदित तिहुं लोक में दामोदर निज नाम ४१
गोकुल नित उत्पात लखि नन्द महर पछिताय॥
सकल गोप मिलि मतो करि वृंदावन बसि जाय ४२

गाय चरावन. बत्सासुर वध. गोदोहन सीखन.
मुक्ताबोवन. बकासुर वध लीला॥

गाय चरावैं जायँ वन ग्वालन सँग गोपाल॥
आवत संध्या के समय देखि सुखी ब्रजबाल ४३

बत्सासुर बन में हन्यो ग्वाल कहैं घर आय
मधुरे बचन सुनाय हरि जननी शोच मिटाय ४४
श्रीरोहिणि दोहनि दई गो दोहन हरि कीन्ह ॥
मगन यशोमति निरखि छबि दान द्विजन को दीन्ह ४५
ब्रजबासी जन जाहिं बलि नारिन मंगल गान ॥
बैठे गोप अथाइ मिलि गोद लिये सुखदान ४६
बये नन्द के अजिर में मुक्ता नन्द कुमार ॥
बार न लागी फरित फल ब्रज जन गूँथे हार ४७
चोंच फारि मार्यो बका ग्वालन प्रकट दिखाय ।
साँझ समय घर को चले बन ते गाय चराय ४८
जननी आवत देखि कै दौरि लियो हरि गोद ॥
भई चकित सुनि बक कथा मधुर वचन सुत मोद ४९

चकई भौंरा खेलन. राधा जी को प्रथम मिलन ॥

चकई भौंरा हाथ ले सखा वृन्द करि साथ ॥
खेलें ब्रज खोरी मुदित गोपी जन के नाथ ५०
मन भायो तिन को करें रोक टोंक दें गारि ॥
मधुर हँसन मटकन चलन रस की छेरा छारि ५१
खेलत यमुना तट गये सखा न कोऊ संग ॥
प्रथम मिलन प्यारी तहाँ बढ्यो प्रीति रस रंग ५२
परी ठगोरी परस्पर मोहे नयन मिलाय ॥
कहैं श्याम खेलो न किन सदन हमारे आय ५३

गाय दुहावन हित गई प्यारी खरिक मँझार ॥
मनमोहनचितचोरमिलिकीन्होंविविधविहार ५४
आप गये हरि निज सदन प्यारी धाम पठाय ॥
देखि विकलभयभीतकछु जननीखीजसुनाय ५५
घर नहिं बैठत फिरत बन कह्यो न मानत कान
दूर खेलन मति जाउ अब सुनि प्रिय मन मुसकान ५६
श्यामा बसी जो श्याम उर श्यामा के जिय श्याम ॥
खेलन मिस प्यारी गई नन्द महर के धाम ॥ ५७
नयन सैन मिलि परस्पर विरह ताप बिसराय ॥
देखिरूप यशुमति मगन पूँछति बैन सुनाय ५८
तू जाई है कौन की कहा पिता को नाम ॥
राधे सब वर्णन कियो बहुरि गई निज धाम ५९
राधे तन श्रृंगार लखि कीरति पति ढिग जाय॥
प्रीतिरीतियशुमतिसकलदीन्हींप्रकटसुनाय६०

अघासुर वध. ब्रह्मा जी का मोह. गोदोहन लीला ॥

मारि अघासुर श्याम ने सुरपुर दियो पठाय ॥
गायबच्छग्वालनसबैहितकरिलियेबचाय ६१
बंशीबट मिलि सखन सँग आरोगत हरि छाक ॥
बछरा चारन हेत बन कीन्हे फैल पराक ६२
भये विरंचि जो मोह वश हरे बच्छ गोग्वाल ॥
धरि अनेक बपु साँवरे कीन्हों चरित रसाल ६३

बर्षबीत ग्वालन कह्यो श्याम हतन अघ कीन्ह।
अविगत गति गोपाल की प्रकटन काहू चीन्ह ६४
प्यारी लखि व्याकुल दशा धेनु दुहित नँदलाल ॥
लैया नोवत वृषभ सों ठाढ़े हँसत गुवाल ६५
गई प्रिया जब खरिक ही आपहु गये कन्हाय।
दुही कुँवर नँद लाड़िले श्री राधे की गाय ६६
चल दोऊ निज निज सदन मनमाने सुख मान॥
बिरह विकल प्यारी भई हरि दृग ओट छिपान ६७
मग माहीं मिलि सखिन सों गिरी धरणि मुरझाय।
कह्यो मोहिं कारे डसी तन की सुधि बिसराय ६८
कहन लगीं सब परस्पर कारो कुँवर कन्हाय॥
लगी फूँकि कछु हमन कों याको विष अधिकाय ६९
लै पहुँचाई सदन हीं कहि कीरति सों बैन ॥
कारे अहि खाई कुँवरि देखहु अपने नैन ७०
सो कारो हमहूं लख्यो विष लाग्यो कछु घोर॥
याकूं अति अब गारुड़ी लाओ नन्दकिशोर ७१
कीरति यशुमति पैं गई लाई कुँवर कन्हाय।
श्याम मंत्र पढ़ि बासुरी प्यारी अंग छुवाय ७२
राधे नयन उघारि तब सम्मुख देखे श्याम ॥
देखत मुख सब दुख गयो जिय पायो विश्राम ७३
चूमि मनोहर श्याम मुख कीरति लेति बलाय।

खान कह्यो मेवा मधुर दीन्हों पान बिदाय ७४
चितै बिहँसि सखियन कह्यो भले गारुड़ी राय॥
गये सदन मोहन मदन तिनके चित्त चुराय ७५

धेनुकासुर. कालीमर्दन. दावानलपान. प्रलम्बासुर
पनिघट लीला. चीरहरण. वृन्दावन वर्णन॥

धेनुक मार्‌यो तालबन श्री बलदेव दयाल॥
कालीदह मूर्च्छित भये गाय बच्छ अरु ग्वाल ७६
अमिय दृष्टिकी वृष्टि करि हरि सब चैतन कीन्ह॥
साँझ समय घर कूँ चले लखि ब्रजजन सुख लीन्ह ७७
सुनि यशुमति ग्वालन वचन गुणचरित्र दोउ बीर
वचन गर्ग मुनि सत्य करि कह्यो दोऊ मति धीर ७८
भोजन करि सुख सेजही पौढ़े जन हितकार॥
यमुना जल निर्मल करूं काली नाग निकार ७९
यह विचार मन में करत भये नींद वश लाल॥
प्रात होत उठि सखन सँग रच्यो गेंदको ख्याल ८०
खेल करत कूदे यमुन दमन नाग को कीन्ह॥
कमल पठाये नृपति कूँ दावानल अँचलीन्ह ८१
मार्‌यो असुर प्रलम्ब ही फल बुझाव करि खेल॥
जयजयध्वनि सुरगण करैं वरषि सुमन सुखकेल ८२
नित नव ठानत अचगरी पनिघट रोकि मुरारि॥
उरहन लै आवैं सदन बहु विधि ब्रज की नारि ८३

रसमय कथा सुहावनी चीर हरण सुख रास ॥
प्रेम प्रीति रस वश हरी दानी विविध विलास ८४
वृन्दा बिपिन सुहावनो तरु तर बैठे श्याम ॥
सखा वृन्द बैठे मुदित अरु भैया बलराम ८५
मधुर वचन वर्णन करैं बन की महत बड़ाय॥
सुखमायो बलराम सुनि ग्वालन मन हरषाय ८६

ऋषि पत्नी. गोवर्द्धन लीला. नन्दएकादशी.
वैकुण्ठ दर्शन॥

ऋषिपत्नी हरि दरश हित भोजन भरि भरि थार॥
अति आतुर शिर धरि चलीं कुल की कानि बिसार ८७
भाव तियन को धारि उर भक्तन हित गोपाल ॥
रुचि करि सब भोजन लियो पठई सदन कृपाल ८८
करत बड़ाई श्याम की द्विज पत्नी गृह आय ॥
तिन के पति तिन दरश ते रहे विमल मति पाय ८९
श्याम सिखावन पूजि गिरि मुदित भये ब्रज लोग ॥
प्रकट दिखायो दरश निज अन्नकूट आरोग ९०
इन्द्र मान मर्दन कियो दीन्हों यज्ञ मिटाय॥
गिरि गोबर्द्धन कर धर्यो ब्रज को लियो बचाय ९१
वरुण लोक तें नन्द कूं ले आये नँद नन्द ॥
नन्द महर ब्रज आय सब कहे चरित ब्रज चन्द ९२
कीन्ह चरित्र विचित्र हरि दिव्य दृष्टि करि दान॥

दिखरायो वैकुंठ ही ब्रज वासिन कूं कान्ह ९३
नटवर वेष गोपाल बिनु अकुलाने सब कोय ॥
भये सुखित पुनि रूप लखि विरह ताप ही खोय ९४

दान लीला. उन्मत्त अवस्था।

भक्तन सुखदायक सदा चरित ललित गोपाल।
दधि दानी भे प्रकट ब्रज रोकि टोकि ब्रजबाल ९५
ब्रज बनिता अरु श्याम को झगरन दान मँझार॥
भक्त जनन मन भावनी लीला सुख की सार ९६
जप तप संयम नेम करि सुनि जन ध्यावैं जासु ॥
परब्रह्म हरि भक्ति वश ब्रज नित विविध विलासु ९७
दान चरित गोपाल को प्रेम भक्ति की खान ॥
गावत सुनत जो पाइये प्रेम भक्ति को दान ९८
दशा प्रेम उन्मत्त ह्वै ब्रज तिय बिसरी लाज ॥
गुरुजन सीख न मानि मन अटकि श्याम ब्रजराज ९९
लोक लाज कुल कानि तजि रँगी श्याम के रंग॥
कहैं जिन्हैं नहिं प्रीति हरि धृग है तिन को संग १००
मगन सकल ब्रजनागरीं प्रेम प्रीति ब्रज राज ॥
तिन में श्री कीरति कुँवरि सब हिन की शिरताज १०१
लोक लाज कुल सुधि गई बँधी प्रेम की डोर ॥
शिर मटुकी दधि वचन सुख लीजै नंद किशोर १०२
नन्द द्वार पूँछत सखिन कोऊ देहु बताय ॥

कहाँ बसत वह सांवरो मोहन कुँवर कन्हाय १०३
ठाढ़ी द्वारे नन्द के गई आपनपो भूल ॥
लगी करन शिक्षा सखी कुँवरि कहा यह भूल १०४
अतिहि सयानी नागरी सो क्यों होय अयान ॥
कृष्ण प्रेम नहिं प्रकट करि रखिये गोय सयान १०५
कह्यो न मो मन हाथ में गयो श्याम के संग ॥
और न सूझे काक कूं भौ जहाज को ढंग १०६
देखि दशा कीरति कुँवरि चतुर सखी अतुराय ॥
गई जहाँ मोहन मदन दीन्हीं बिथा जनाय १०७
सुनत श्याम अति हर्ष मन साँचि प्रीति जियजान॥
विहँसि बिदा कीन्ही त्रिया मिले प्रिया अतुरान १०८
कुंज कुटी दोऊ मिले राधा नन्द किशोर ॥
प्रेम वचन कहि परस्पर परम प्रमोद न थोर १०९
धाम पठाई भावती भेद पुरातन गाय ॥
प्रीति पुरातन गोइये जग व्यवहार जनाय ११०

प्रीति को दुरायबो. स्थान॥

चली सदन गजगामिनी हरि छबि रहे निहार ॥
अति आनन्द उछाह मन राधे करत विचार १११
यह धन प्रकट न करि कभूं कहूं भेद नहिं खोल॥
मिली सखी मग देखि छबि बिहँसि वचन सुख बोल ११२
कहे देत छवि अंग की मिली जो नन्दकिशोर॥

नहिं छिपात कैसेहुं सखी जो सुगंन्ध को चोर ११३
सखी भई कह बावरी कहत प्रिया सुख बैन ॥
तू जो कहत सो क्यों भवै मैं नहिं देखे नैन ११४
यह सुनि हँसि बोली प्रिया पदि आई चतुराय।
सुफल मनोरथ श्याम सँग हम सों कहा दुराय ११५
फिरत हुती ब्याकुल अबै तन की सुरति बिसार॥
जाउ प्रिया कहुं लेहुँगी पकरि फन्द में डार ११६
सकुच सहित कीरति कुँवरि आई अपने धाम।
राधे घर बैठत न क्यों डोलत बन सँग श्याम ११७
ये जननी के वचन सुनि प्यारी श्याम सुजान ॥
भोर वचन कहि दूरि करि मन की सकल गिलान ११८
कहत गई नहिं आज लों प्यारी की लरिकाय॥
निज रिस कूं पछितायसुनि कीरति हेत जनाय ११९
प्रथम सखी जो मग मिली कहे सखिन सों बैन ॥
भेद छिपावन हरि प्रिया मिलन श्याम सुख देन १२०
सो सुनि आगम सखिन को पिय प्यारी के धाम॥
नयन सैन रस वचन सुख कथा ललित अभिराम १२१
पचिहारीं सब गोपिका फिरी मान निज हार॥
गुप्त भेद हरि प्रिया को करि पायो न उघार १२२
राधा हरि उर में बसै सरस भजन सुख सार ॥
यह चलाव घर घर न ब्रज ब्रजजन प्राण अधार १२३

श्रीराधा उठि प्रात ही चली करन अस्नान ॥
पहुँची सखिन समूह में पायो आदर मान १२४
कहत अनोखी आज क्यों एतौ आदर कौन ॥
सखिन कह्यो हम क्यों रहैं जैसे तुम धरिमौन१२५
बचन तर्क के परस्पर रसमय हास विलास ॥
गई यमुन तट गोपिका सँग प्यारी सुखरास १२६
करि विहार आनन्द जल ठाढ़िं कराठ प्रमान ॥
ठाढ़े तट छबि देखहीं आये रसिक सुजान १२७
कबहुँ मधुर कल वेणु में नान्हे स्वर कछु गाय ॥
नखशिखछबिहरिमनहरणवर्णातपारनपाय१२८

छबि वर्णन. सखी अवस्था. बाट को मिलन.
संकेत को मिलन॥

प्यारी निरखन रूप हरि मति गति देन भुलाय ॥
औरसखिनचरचासुखदवर्णनछबिहरिराय १२९
यह शुभ चरित सुहावनो भक्तन पूरण काम ॥
हितचितकरिनितसुमिरियेमगनध्यानघनश्याम१३०
अंगअंग छबिश्याम की निरखैं सब ब्रज नार ॥
अटक्योमनब्रजतियनकोनिजनिजरुचिअनुसार१३१
मोहिलियोमनसभनको छबिसागर रस खान ॥
ब्रजबनिताउरझीं विवशसकतनहीं सुरझान १३२
मुरलीधर कछु मधुर ध्वनि ले प्यारी को नाम ॥

अनुपम छबि दरशाय निज गये सदन कूं श्याम १३३
रहीं ठगीं ब्रज नागरीं लियो कृष्ण मन छीन ॥
गईं सकल निज निज सदन युगल प्रेम रस लीन १३४
हरि तिनके उर में बसें बिनु देखे नहिं चैन ॥
गृह कारज नहिं मन धरैं सुनैं न गुरु जन बैन १३५
हरि रस लीला मगन मन गोपी गण धरि ध्यान ॥
प्रेम भक्ति निशिदिन करैं हरि श्यामा गुण गान १३६
मनमोहन मनमोहनी गई जो अपने धाम ॥
मनमोहन बिनु कल न क्षण रामन खीजत कहि वाम १३७
हरि विमुखन के संग ते कौन भाँति करि छूट ॥
श्याम दरश रस सरस सुख पाऊं निशिदिन लूट १३८
बिन सुन्दर हरि मन हरण जग जीवन धृग जान ॥
धृग लज्जा धन धाम धृग धृग कुल गुरु जन कान १३९
सखी अवस्था प्रिय कथा प्रेम भक्ति को सार ॥
मिले बाद संकेत बन राधा नन्द कुमार १४०

॥ कुंज बिहार. प्यारी के गृह को मिलन ॥

नट खोई मोती सरी प्रिया मातु समुझाय ॥
गये श्याम बन कहि मह हरि ध्याई लोही गाय १४१
नवल कुंज दोऊ मिले बिलसत मदन बिलास ॥
भरे परम आनन्द रस दम्पति रस की रास १४२
गये युगल निज निज सदन चतुर शिरोमणि जान ॥

दोउ जननी धीरज दियो करि निज चरित सयान १४३
भये श्याम बश प्रीति के लखि प्यारी जिय चैन।
अति अनुराग भरे दोऊ नयन सैन रस मैन १४४
प्रेमाकुल मग में मिले मन डरपी सकुचाय ॥
सखिन संग बोली न मुख दीन्हों भाव जनाय १४५
काहू तिय प्रति कहि प्रिया ऐयो हमरे धाम ॥
गुप्त भाव जान्यो सबै चतुर शिरोमणि श्याम १४६
बसे रैन प्यारी सदन मोहन नन्द कुमार ॥
प्रकट दियो सखियन दरश निकसि भवन के द्वार १४७
करत सखी परिहास सब आई प्यारी पास ॥
कियो बोध सब तियन को बाणी मधुर प्रकास १४८
सुनि प्यारी के मृदु वचन अरु लखि परम सयान
धनि धनि धनि सखियन कह्यो उरन हिं हर्ष समान १४९
तू अर्द्धंगिनि श्याम की धनि धनि तेरो नेह ॥
एक प्राण द्वै देह तुम जानो निस्सन्देह १५०

गर्ब्ब ब्याज बिरह. परस्पर रूप अभिलाष बन कुंज गमन ॥

गर्ब्ब विभंजन जन सुखद आये प्यारी धाम ॥
झाँक्यो प्यारी तन उझकि कियो गर्ब ही वाम १५१
कटुक वचन मुख सों कहे देख्यो भरि नहिं नैन ॥
तुरत गमन तहँ ते कियो ह्वै उदास गुण ऐन १५२

विरह व्यथा व्याकुल प्रिया घर बाहिर न सुहाय।
देखि दशा पूंछें सखी सो सब प्रकट सुनाय १५३
सुनु राधे करतूत निज करि दुराव बहु ढंग ॥
महत गवाँयो आपनो फिरत श्याम के संग१५४
जो चाहो पिय वश कियो बैठो मान बढ़ाय॥
कहत प्रिया यह को करे विरहा अनल जराय१५५
प्रिया सखी जब प्रीति वश प्रीतम जाय सुनाय॥
प्रीतिमानि प्रीतम विहँसि मिले प्रिया सों आय१५६
मिलन देत दम्पति सुख दस खिन परम अनुराग॥
धन सुख लूटत निरखि छबि राधा श्याम सभाग१५७
युगुल रूप जहँ परस्पर करत सुधा छबि पान॥
विवश भये प्रिय रूप लखि मोहन रूप निधान१५८
कबहुं पीत पट बाँसुरी वारैं नन्द कुमार ॥
कबहुं वारि तन मन हरष प्यारी रूप निहार १५९
मगन श्याम रस बाम के निज स्वरूप सुधि खोय॥
मन सिहात शोभा निरखि कुँवरि सरीखन कोय१६०
पुनि पुनि मन अभिलाष करि भूषण तिय निज लीन्ह
नख शिख शोभा मन हरण रूप प्रिया को कीन्ह१६१
प्रिय भूषण हँसि हँसि सकल माँगि लिये जो बाम॥
नागर नागरि साँवरी बागरि गोरे श्याम १६२
निरखि रूप छबि परस्पर युगल रूप आनन्द॥

मान कियो जब माननी बिकल विरह नँदनन्द १६३
हर्षि हँसे हरि सुनु प्रिया तुमहिं कह्यो कर मान ॥
खेल करत मुरझाय तन कहा तुम्हारी बान १६४
मिट्यो बिरह हर्षी प्रिया लियो धारि निज रूप।
चले हर्षि बन कुंज को दोऊ नारि स्वरूप १६५
भुज भुज कराठ चले मगन गज गति शोभासार।
बिछिया नूपुर युगल पग होत अधिक झनकार १६६
उतते चन्द्रावलि सखी आवत देखे नैन ॥
प्रिया संग यह साँवरी सखी कौन गुरा सेन १६७
निकट आय लखि श्याम छबि हँसी चतुरई जान
प्रकट करीं गुरा शेउन के कह्यो सखी मन ठान १६८
अबलों हम देखी नहीं सुन राधे ब्रज गेह ॥
कहा रहत आई कहाँ तुम सौं कौने नेह १६९
मोहिं देखि घूँघट करत सुनी न अबलों कान ॥
तिय सों सकुच न तियन को प्यारी चतुर सुजान १७०
घूँघट पट ह्याँ तो कियो परस बदन सुख चैन ॥
हम तन क्यों चितवत नहीं सकुच छाँडु भरि नैन १७१
सुन राधे जब सों मिली तुम दोउ प्रीति लगाय ॥
बिसरि दियो हम सियन को राखत भेद दुराय १७२
तुम हू कुशल ये हू कुशल गुरा निधि परम सयान।
जाउ चले निज स्वारथी हमें हरष पहिचान १७३

दम्पति कियो विचार मन इन सों नाहिं उवार।
मिले प्रकट उर लाय तब सकुच दुराव निसार १७४
गये कुंज बन सघन छवि उभय वाम बिच श्याम।
सुमन पुंज अलि गुंज लखि नख शिख सुख को धाम १७५
विपिन सुहावन विमल शशि यमुन पुलिन सुख दैन।
करि विलास बिस रैन वन उठे प्रात छवि रैन १७६
लूटत सुख तहँ परस्पर रीझत छबिहि निहार ॥
चले कुंज ते विलस रस राधा नन्द कुमार १७७
सखी सहित ब्रज धामही आये राधा श्याम॥
बसत प्रिया उर श्याम के श्यामा उर घनश्याम १७८

शृंगारभवन लीला॥

भवन बैठि राधे करत निज तन सरस शृँगार॥
कर दर्प्पण छवि निरखि मन बाढ़्यो हर्ष अपार १७९
प्रेम विवश हरि साँवरो प्रिय बिनु लहत न चैन ॥
उझकि झरोखन झाँकहीं मुदित निरखि छवि नैन १८०
भ्रमित भई प्रतिबिम्ब निज प्यारी मुकुर निहारि॥
कहत कहाँ ते कौन यह आई सुन्दरि नारि १८१
जो मोहन यहि देखि हैं रीझि करैंगे संग ॥
को लायो करि बैरता किन कीन्हें ये ढंग १८२
डर पावत प्रतिबिम्बकूं हरि सुरा करत बखान॥
बेगि जाउ घर राखि पति सीख हमारी मान १८३

सुनि सुनि प्यारी के वचन हर्षे हरि गुरा ऐन ॥
औचकि पाछे तें सुखद मूँदे प्रिय के नैन १८४
अपने कर पिय कर पकरि करि सन्मुख सुख वैन ॥
मैं सखियन धोखे रही तुम हो पिय सुख दैन १८५
मिले युगल लपटाय उर रस मय वचन उचार ॥
गये सदन मोहन मदन इत प्रिय हर्ष अपार १८६
तेहि अन्तर चन्द्रावली आई सखियन संग ॥
सादर सन्मानी सबै प्रिया प्रीत रस रंग १८७
मुकुर कथा मूँदन नयन मिलन पिया सुनि कान ॥
पुलकि प्रफुल्लित गात सब प्यारी भाग्य बखान १८८
तेहि अवसर सुनि श्याम ने दियो दरश अभिराम ॥
रूप ठगोरी लाय सब मोहीं ब्रज की वाम १८९

नयनानुराग ॥

कहन लगीं सखि परस्पर हरि छबि अटके नैन ॥
नयना बड़ी बलाय जो मिले श्याम की सैन १९०
मृदु मुसकनि घनश्याम के बेच दियो मन मोर ॥
रुचि करि हित घनश्याम सों फिरत न हमरी ओर १९१
रहे न काहू काम के अब ये हमरे नैन ॥
ह्वै गुलाम सन्मुख रहत संग श्याम दिनरैन १९२
लाज शंक डारी सबै जग उपहाँसि कराय ॥
सुनत न हठ करि अटक छबि पचिहारी समुझाय १९३

मगन ध्यानघनश्यामकेव्रजवनितावड़भाग ॥
प्रेम विवश डूबत दृगनभरीपरम अनुराग १९४
लखि प्रेम पूरण सकल करत रही ये बैन ॥
करी छैल ब्रज चन्द ने मुरली ध्वनि रस सैन १९५

मुरली को परेखो॥

सुनत श्रवण चकतभई गई सकलसुधि भूल ॥
कछुसँभारकछुह्वै बिवशप्रेम हिंडोरा भूल १९६
ह्वै सुचेत कछु धीर धरि बोली गोपकुमारि॥
ब्रज में आई कौन यह मुरली सवति हमारि १९७
आवत ऐसे ढंग करि वश करि लीन्हें श्याम॥
सहजहि चाखत अधररस अभिलाखितब्रजबाम १९८
आवत हमरो धन लियो भई कठिन दुखदाय ॥
सजग होउ सखि करियतन मुरली दूर कराय १९९
नन्द नँदन जा वश भये रीझ अनोखी बाम ॥
कियोविदित तिहुं लोक में मुरलीधरसो नाम २००
जाके सँग मिलि गावहीं नाना तान तरंग ॥
अब नहिं छूटत श्याम सों या मुरली को संग २०१
कहा भयो हरि मुख लगी अपनी प्रकृति न त्याग॥
काष्ट बंश प्रकटी निठुर निठुर सुनावत राग २०२
श्याम किये हम ते निठुर अपनो स्वारथ साध ॥
कहाँ रहत आई कहाँ हीन जाति बन व्याध २०३

कोउ मुरली की कुल कथा वर्णत निन्द अपार॥
कोउ सराहत धन्य तप मिली जो नन्दकुमार २०४
मुरली सरि कोउ मति करो धनि धनि ताहि बखान
फैलि रह्यो त्रिभुवन सुयश शारदादिगणगान २०५
देउ बजावन बाँसुरी मति बरजो अलि कोय॥
वैर किये बाढ़ै विरस प्रीति किये रस होय २०६
हम सो सन्मुख ह्वै सदा लगि मुख श्याम सुजान॥
सुनहु कान करि करि रही राधा राधा गान २०७
श्याम पियारी राधिका राधा प्यारे श्याम॥
मुरली यह यश कहत सुख सुनि हर्षो ब्रजवाम २०८
श्रीमुख श्री राधे कह्यो धनि धनि याको बंस॥
धनि धनि धनि हरिमुख लगी करत सखी परिशंस २०९
जबहिं बजावैं बाँसुरी मोहन मधुर तरंग॥
ब्रजललना सुनि चकित अति पुलकि प्रफुल्लित अंग
धनि धनि जग सोइ गाइये जिन उर सदा निवास॥
मुरलीधर मुरली धरैं प्रिया संग सुखरास २११

शरदरास वर्णन॥

गोपिन तप हरि होहिं पति वर दीन्हों घनश्याम॥
चीरहरण करि सुख दियो बोलि वचन अभिराम २१२
मन भाई तुम्हरी करूं शरद रास आनन्द॥
गये आप वन्दा विपिन शरदरैन नँदनन्द २१३

सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि श्री वृन्दावन धाम
महत अमित बेदन विदित हरि विहार विश्राम २१४
देखि श्याम बन धाम सुख सुमन सुगन्ध अपार॥
शारदरैन यमुना पुलिन रुचिर रसरास विहरि २१५
श्री मुरली धर अधर धरि मुरली ध्वनि रस मूल॥
शिव विरंचि मुनि सुनि अवरा गये अपनपो भूल २१६
मन मोहन बंशी बजी छाई ध्वनि तिहु लोक॥
विश्व विमोहन सुखसदन हरण ताप अघशोक २१७
प्यारी पिय नँदनन्द की ब्रज तिय रस अधिकारि॥
सुनि ध्वनि बौरी सी भई उरतें धीरज डारि २१८
बाजी बाजी कहि उठीं प्रेमाकुल ब्रज बाम॥
मुरली ध्वनि पिय बोलहीं लै लै सब को नाम २१९
चलीं सकल गृह काज तजि लोक लाज सब डार॥
प्रेम विवश नहिं सुरति तन कीन्हो उलट शिँगार २२०
मुरली ध्वनि मारग गह्यो रोकि थके पितु मात॥
चलीं मगन हरि ध्यान धरि सुनी न सुत पति बात २२१
मिलीं श्याम बन जाय सब भरीं परम आनन्द॥
नटवर बपु मुरली अधर दरशा सरस ब्रज वन्द २२२
मनही मन अति हर्ष हरि कह्यो न तुम भलि कीन॥
आईं बन निशि त्यागि पति वेद पन्थ करि हीन २२३
निठुर वचन सुनि श्याम के विरह विकल ब्रज बाल

बोलेपुनिदोउजोरिकारदीनवचननँदलाल २२४
अंकमभरिसबहिन मिलेधनिधनिप्रीतिबखान।
गये यमुन तटसंग लै रस बिहारसुख दान २२५
मन भायो सब को कियो नाना रंग विलास॥
बहुरिश्याम मिलि संगरुचिउपजायोसुखरास २२६
बिचगोरी बिचसाँवरे मराडल विधियों जोर। ॥
मध नायक निरतत चपल राधा नन्द किशोर २२७
रासविलास अपारसुख मुदित निरखिसुरनारि॥
धनिधनिकहिबरषैंसुमनकौतुकलखिबलिहारि
थकित भई निरतत जबै ब्रज सुन्दरि श्रम पाय॥
श्रमजलपोंछितपीतपटमोहनपवनडुलाय २२९
रूपशील गुरा आगरीलखिपतिगतिस्वाधीन॥
मन मेंगर्ब कियोतियन अबहमपियबशकीन २३०
कोउ अंगन भुज दे कहत गर्ब्ब धारिउर बैन ॥
भई अमित पिय पायँथकिमुसकानेसुखदेन २३१
कोउ कराठ भुज गेलिके लटकिरही गर्ब्बान॥
सुनहु श्याममो पै न अब होत निर्त अरु गान २३२

अन्तर्द्धान लीला॥

युवतिन मन हरिगर्बलखिकहतमनहिंमुसकाय।
करूसदा मन भाय जन गर्ब्ब न मोहि सुहाय २३३
लेवृषभानु कुमारि संग ह्वै गये अन्तरधान॥

चक्रत विकल सब गोपिका लखैन श्याम सुजान २३४
अति आतुर खोजत फिरैं चहुँ दिशि दृष्टि पसारि॥
कहें प्रिया सँग ले गई रिस करि दें रस गारि २३५
चरण चिन्ह देखत फिरैं बन में होय अधीर।
श्याम श्याम कहि कुंज में टेरत यमुना तीर २३६
हरिपद चिन्ह लख्यो तियन प्यारी पद अभिराम॥
बन्दन करि खोजत चलीं वाही मग ब्रजबाम २३७
कुँवरि कान्ह प्रिय संग बन विलसत विविध विलास
पति हित लखि दियो गर्ब को पिय प्यारी जिय वास २३८
मो हित बश हरि सब कियो करि विचार प्रिय हीय॥
और नहीं युवती कोऊ मो सम प्यारी पीय २३९
कहन लगी पिय बाहँ गहि अमित चल्यो नहिं जाय
सुनहु मित्र मोहन सुखद लीजे कन्ध चढ़ाय २४०
अन्तर्द्धान भये तुरत सुनत गर्ब्ब सुख बैन॥
निकट हुँ देखत दशा प्यारी की निज नैन २४१
भई चक्रत गये श्याम कित पछितावत अकुलान।
नारि बुद्धि ओछी कियो प्रीतम सों अभिमान २४२
विरह व्यथा रोवत विपिन ढारत नयनन नीर॥
तहँ आई ब्रज तिय सकल खोज करत बलबीर २४३
देखि दशा बूझ्यो तियन कह्यो कुँवरि सब खोल॥
भई मन्दमति मान करि चढ़न कन्ध सुख बोल २४४

हँसि मोहिं कन्ध चढ़न कह्यो ह्वै गये अंतर्द्धान ॥
छाँड़ि अकेली बन गये कहत प्रिया बिलखान २४५
चलीं सकल खोजत फिरैं कहाँ दुरेउ ब्रजराज ॥
चूक क्षमा प्रभु कीजिये दीनबन्धु रखि लाज २४६
तुमहिं सदा रक्षक रहे विविध भाँति हित हेत ॥
अहो नाथ जिय क्यों धरी सुखद होय दुख देत २४७
प्रेमाकुल घन बन फिरैं जड़ चेतन न सँभार ॥
बनबिटपन बूझैं बिलपि देखेउ नन्दकुमार २४८
बन बन ढूँढि निराश ह्वै फिरि आईं प्रिय पास ॥
श्याम विरहमनु नीर बिनु तलफत मीन उदास २४९
पुनि जुरि मिलि गईं यमुन तट बैठि रास की ठौर ॥
करन लगीं सोइ गान गुरा किये जो नन्दकिशोर २५०
श्यामहिं कोउ न देखहीं निकट खड़े गुरा ऐन ॥
विरह ताप मन प्रीति दृढ़ लखत तियन के नैन २५१
गावत गुरा भईं कथा में बिसरी सकल अपान ॥
मगन ध्यान रस गोपिका भृंगी कीट समान २५२
करैं परस्पर चरित सब प्रकट प्रेम रस रूप ॥
भये निरन्तर जन सुखद दियो दरश ब्रज भूप २५३
हर्षि प्रिया लइ लाय उर मिले सबन ब्रज राय ॥
विरह ताप बिसराय पुनि वचन रसाल सुनाय २५४
तुम सब उत्तम प्रीति करि तन मन अर्पन कीन ॥

नहीं उऋण तुम तें कभूं रहौं प्रेम आधीन २५५

महामंगल रास॥

युवतिन मन की गाँसि सब दूर करी नँदलाल॥
पुनि मह मंगल रास रचि कीन्हें चरित रसाल २५६
मगन भई तिय रास रस रीझत तन मन वार ॥
हिय हुलास रचि व्याह विधि गाये मंगलचार २५७
दुलहिनि श्रीराधा कुँवरि दूलह नन्द कुमार॥
व्रज सुन्दरि सोरह सहस भाँवरि शोभा सार २५८
सुर गण लखि वर्षें सुमन वृन्दावन रस रास ॥
सखिन प्रीति रस रीति लखि दम्पति हर्ष हुलास २५९
एक बनी नँदराय जू इक वृषभानु स्वरूप ॥
धाय मिले समधी दोउ कहि कहि वचन अनूप २६०
वरसाने की रीति हित यशुमति को दें गारि॥
कंकन छोरत अमित सुख बिलसैं व्रज की नारि २६१
भये मनोरथ पूर सब शारद रैन सुख दैन॥
होत प्रात क्रीड़ा सलिल श्री यमुना सुख ऐन २६२
मदन गुपाल बिहँसि कह्यो जाउ सदन व्रज बाल॥
चलीं मगन व्रज सुन्दरीं पति पाये नँदलाल २६३
नन्द नँदन आनन्द निधि गये नन्द के धाम ॥
भक्तन मन रंजन सदा चरित ललित घनश्याम २६४

मानचरित्र. लघुमान॥

भक्तन फल दायक सदा पूरण बाञ्छित काम।
यह विचार मन में कियो गुणनिधान घनश्याम २६५
युवतिन कियो जो रास में गर्व साध मन माहिं॥
अन्तर करि हरि हर लियो इमें मनायो नाहिं २६६
सो अब मान चरित्र करि पूरण करि हौं साध॥
मान छुटाऊँ पायँ परि माँगि छमा अपराध २६७
नन्द नँदन औचकि गये प्यारी भवन शिँगार॥
हर्ष अंक भरि निरखि छबि कमल वदन बलिहार २६८
पिय मन तन परछाहिं लखि झझकि प्रिया मन जान
और नारि पिय हिय बसत आये मोहिं दिखान २६९
कियो मान उपजाय भ्रम अनख वचन कहि पीय॥
बात मिलावत हो प्रगट हित जासों जो हीय २७०
प्यारी रिस करि मौन गहि लियो मान उर धारि॥
गारि मन हिं मन सोति कों डरे न बोल मुरारि २७१
मान करत रिस करि वृथा बिना जानि अपराध॥
कहन लगे श्री मुख बचन हम न हिं कीन्ह असाध २७२
मो मन तुम परछाहिं तन अधिक रोस सुनि कीन्ह॥
जाउ चले बोलों नहीं प्रिया ओट उठि लीन्ह २७३
अति व्याकुल शोचत महा बिरह विवश ब्रजराय॥
वदन गयो मुरझाय हरि पूँछि दूतिका आय २७४

बैठे कहा गँवाय तुम क्यों तन रहे भुलाय ॥
दशा आज कैसी लखत क्यों नहिं कहत सुनाय २७५
प्रिया रूसि परछाहिं लखि बिनु समझे हठ कीन्ह ॥
मदन दुरवत्त निज विकलता कही सुखी सुनि लीन्ह २७६
चतुर सखी बन ले गई बैठारे दे धीर ॥
आतुर चलि गई कुँवरि ढिग कहि बोलत बलवीर २७७
काहि बुलावत श्याम मोहिं अनख वचन प्रिय भाखि
भली भाँति लिये जानि में नइ नारी उर राखि २७८
कहा कलह भयो आज कछु कहत अनमने बैन।
कह्यो न हरि कछु सहज ही पठई तुम को लैन २७९
चतुर दूतिका कुँवरि सों कहे चतुरता बोल ॥
बिहँसि लई लपटाय उर छाड़ि मानु सुख खोल २८०
पठै दई बन धाम कूं कह्यो पिया सों जाय।
आवत श्री वृषभानुजा अंग शिंगार बनाय २८१
मिली जाय राधे कुँवरि मन मोहन नँद नन्द ॥
गुण सागर नागर युगल रस आगर सुख कन्द २८२
वृन्दाबन घन कुंज छबि भँवर गुञ्ज अभिराम ॥
सुमन पुंज सुख धाम अति विलसत राधा श्याम २८३
नयन कोर ताकन लगी प्यारी पिय को हीय ॥
पीताम्बर ले आपनो ढाँकि लियो तब पीय २८४
बलिहारी सखि सुख कह्यो सो छबि लखि सुख पाय

अविचल जोरी मोहनी श्यामा श्यामसुहाय२८५
गयेश्याम श्यामासदन सखी सहितकरिकेल॥
यहि विधिब्रज घरघरकरतसदाश्यामरसरेल२८६
अवधिवदत केहु धामकीवसत काहु के धाम॥
काहू लेत मनाय हरि रुठवत काहूश्याम २८७
जाहि मिलन कहिरैन कूं मिलैं ताहि परभात॥
कहुँ आदर अपमानकहूंसुखसुनखंडितबात२८८
ब्रज विहरत ब्रजभावतो ब्रज बनितन के संग॥
बहुतरुणीरमणीयहरिछबिनिधि निधिरसरंग२८९

ललिता शीला को मिलन. चंद्रावली सुखमाको मिलन॥

श्रीसुख ललिता सों कह्यो ऐहैं तुम्हरे धाम॥
बसै रैन शीला सदन रसिक शिरोमणि श्याम२९०
चन्द्रावलि सों अवधिवदि सुखमा सदन सिधार॥
होत प्रभात दीन्हों दरश ठाढे अजिर निहार २९१
बोली तिय जियरोष करि कहा काम मो धाम॥
जाउ चलेवाही सदन बसे जहाँ निशिश्याम २९२
रस चरित्र करि वश कियो दीन्हों मानछुटाय॥
अंकमभरिसबसुख दियोगयेसदनब्रजराय२९३

मध्यस मान॥

प्यारी पिय नँद नन्द की श्री वृषभानु कुमारि॥
सहज रहतु मन आपने यही विचार विचारि२९४

नन्द सुवन मम धाम बिनु बसत न दूजे गेह ॥
के निज भवन रहत सदा चित में यही सनेह २९५
एक दिवस उठि प्रातही गये प्रिया के धाम ॥
अंग चिन्ह रति रंग लखि भयो कुँवरि उर ताम २९६
जाउ चले पिय तिन सदन जिन सँग कीन्हों हेत ॥
प्यारी सुख खरिडत वचन सुनि सुनि पिय सुख लेत २९७
सकुचि श्याम कहि मृदु वचन भूमि निहारत नैन ॥
किन देख्यो कौने कहे तुम सों झूँठे बैन २९८
पिय बिन बोले ही रहो सब झूँठे तुम साँच ॥
सोंह करन सुनि सुनि वचन अधिक होत हिय आँच २९९
आईं तहँ व्रज नागरी हरि छबि रहीं निहार ॥
सखिन भीर लखि साँवरे गये शोच वश द्वार ३००
मान धारि मन माननी सखियन कहत सरोष ॥
देखि लेउ गुरा श्याम के कह्यो न फिरि मोहिं दोष ३०१
जान देउ कह काम ह्याँ मैं बैठी निज धाम ॥
प्रिया गई निज धाम कहि तुमहु जाउ निज काम ३०२
सखिन द्वार हरि सों कह्यो चतुर कहावत नाम
अटपट रूप दिखाय क्यों रोष करावत वाम ३०३
श्याम पठाई दूतिका गई प्रिया के पास ॥
हृदय रोष करि मानदृढ़ बैठी कुँवरि उदास ३०४
देखि दशा पूँछन लगी कियो आज कह मान ॥

कह्यो सखी कीजे कहा रिसवत श्याम सुजान ३०५
लाज छाड़ि घर घर फिरत करत अटपटे ढंग ॥
आन दिखावत प्रात मोहिं अंग ठाठ रति रंग ३०६
जित चाहें तितहीं फिरैं रही सखी मैं बाज ॥
बिलसो घर घर व्रज सदा उन को यहाँ न काज ३०७
परम सयानी दूतिका सुने कुँवरि मुख बैन ॥
प्रकट रोष रस प्रेम हिय देखि आपने नैन ३०८
द्वारे ठाढ़े श्याम घन कहत मनहिं पछितात ॥
पर घर भूलि न जाइ हौं दीन होय सों खात ३०९
मैं आई तोसों कहन प्रिया तजो नहिं मान ॥
जबलौं पर घर जान की समुझ न छोड़ें बान ३१०
हैं द्वारे यह सुनि पिया रस उमग्यो मन माहिं ॥
चतुर कुँवरि हरिवल्लभा कियो सो परगट नाहिं ३११
काहे को द्वारे खड़े क्यों न जाहिं निज गेह ॥
गई सखी हरिसों कहन जान प्रिया मन नेह ३१२
कहत आन की आन मुख काहि मनाऊं लाल ॥
नेकु मरम नहिं पाइये सूधे बोलि न बाल ३१३
मैं अपनो सो करि थकी वह तिरछी भौं तान ॥
कोटि कोटि मुखसों करत सेगुरा तुम्हरे गान ३१४
कहा बसीठ करै कोऊ चलत न नेकु उपाय ॥
सुनहु रसिक वर साँवरे लीजे आप मनाय ३१५

भये बिकल सुनि साँवरे सखी चलीं दे धीर ॥
कह्यो जाय प्यारी निकट श्याम बिरह की पीर ३१६
यहै प्रीति की रीति है मिलिये श्याम सुजान ॥
करत श्याम तेरोइ चरित भरे प्रेम रस गान ३१७
प्रिया कहत जानी परी तोहिं पठाई श्याम ॥
नहिं मानूं तेरी कही कहा मिलन सों काम ३१८
कान्ह कपट की खान हैं कहत और की और ॥
तिन वामन ह्वै बलि छल्यो तू बखान करि भोर ३१९
मान छुड़ावन हित सखी करि बखान विस्तार ॥
मुसकानी कछु माननी श्री मुख वचन उचार ३२०
इत की उत तू करि रही झूठी बात बनाय ॥
गरज परें ऐहैं यहाँ आपहि हाहा खाय ३२१
सुनि प्यारी के मुख वचन मुदित दूतिका वाम ॥
तज्यो मान अबलाड़िली सुफल मनोरथ श्याम ३२२
कहन लगीं ऐसे हिं रहो ल्याऊं हरिहिं लिवाय ॥
पिय मन नूतन चोंप बढ़ि रस अनूप उपजाय ३२३
कह्यो जाय नँदलाल सों मैं मानी निज हार ॥
मान न छाँड़त लाड़िली रही कहा जिय धार ३२४
लीजै आपु मनाय चलि हूं थकि आवत जात ॥
मोसी जो पठवहु कितिक नहिं माने प्रिय बात ३२५
करि विनती तियतें मिलो छाँड़ि लाल उर लाज ॥

यहि वेड़न के बचन हैं आप काज मह काज ३२६
गये जहाँ बैठी प्रिया प्रयाम सखी के संग ॥
मगन प्रेम आधीन तन मनसकोच करि ढंग ३२७
मुसकानी पिय रूप लखि डरपत हैं जियजान ॥
कह्यो नहीं कछु मुदित मन प्यारी रही चुपान ३२८
अब नहिं उचटाऊँ पियहि मन मनकरत विचार ॥
आदर करि बैठन कह्यू सकुचित नन्दकुमार ३२६
जीके जीवन पीय हैं तू प्यारी प्रिय जीय ॥
कहत सहचरी बोलमुख कब के ठाढ़े पीय ३३०
यह कहुं भयो न आज लौं सुन्यो नहीं हम कान ॥
होत कौन विधि रूसिबो लनते जीवन प्रान ३३१
कराठ लागि मिलु पीयसों आदर करि बैठार ॥
वे ठाढ़े तू मौन गहि बैठी मान पसार ३३२
यह सुनि हँसि प्यारी कह्यो राजो पियघनश्याम॥
करि मोरि सौंह बोलिये करिहुं न ऐसो काम ३३३
कह्यो सौंह करि लालजे प्यारी शिर कर राखि ॥
सही आज तें बात यह देत सहचरी साखि ३३४
निज कर प्यारी ने दियो तबहि पान नँदलाल ॥
सखीसकल आईतहाँ तेहि अवसरततकाल ३३५
श्याम सौंह जानी सबै प्यारी मुख मुसकाय ॥
आदरकरिबैठन दियो लखिसब छिनसुखपाय ३३६

बिहँसि प्रिया सखियन कह्यो मगन अनन्द उछाह
कह्यो सकल मिलि श्याम अब भये चोरते साह ३३७
यह सुख लाडिलि लाल को लखि सिहात ब्रजबास
बसे रात प्यारी सदन गये प्रात हरि धाम ३३८

प्रमुदा·कुमुदा को मिलना॥

नन्द द्वार ठाढ़े लखे फिरे सकुचि ब्रजराय ॥
छिपे जाय प्रमदा सदन निरखि बदन सुख पाय ३३९
कहत सखी भूले कहाँ तरक वचन बहु भाँति॥
चले हँसत कहि आज हम ऐहैं तुम्हरे राति ३४०
श्याम मिलन मन चाव अति रचि रुचि कियो शृंगार
गई बीति निशि बाम कूं बैठी बाट निहार ३४१
बसे श्याम कुमुदा सदन बढ्यो अधिक उर हेत॥
प्रेम रंग भीजे दोऊ अति उमंग सुख लेत ३४२
भयो भोर प्रमुदा सदन दियो दरश हरि जाय॥
गुण निधान करि चरित सुख भेंट मान छुटाय ३४३
समुझि समुझि पिय के गुणन परम हर्ष तिय मान
ब्रजनायक घनश्याम गुण सुख सागर रसखान ३४४

अथ गुरुमानलीला॥

सखिन संग प्रिय प्रात उठि चली करन अस्नान॥
गई बुलावन जासु घर बसे रैन तहँ कान ३४५
प्यारी द्वारे जायबो पियको निकसन द्वार ॥

श्रोचकि मिलि चकृत भयेइत उत उभय निहार ३४६
रह्यो न्हान आई उलटि विकल रोय मन धारि ॥
रहीं सखी ठाढ़ी रहे ठाढ़े सकुचि मुरारि ३४७ ॥
मुरझाने लखि लाल कूं सखिन श्याम समुझाय॥
पकरि बाँह लाई तहाँ रिस बैठी प्रिय जाय ३४८
बैठी मान दृढ़ाय उर मगन रिसहि रस बाल ॥
चित्त बिकल ठाढ़े चकित मुख अबोल नँदलाल ३४९
सखियन करत विचार मन प्यारी जिय अति रोस॥
मिलैं कौन बिधि श्याम उर तज्यो धीर अपसोस ३५०
गईं सकल प्यारी निकट कह्यो कियो तुम मान॥
तोहिं लखि हरि डरपान अति मुरझि भरी अकुलान
बहुनायक जानत नहीं कहा इतो दुख जीय॥
गहो बाँह लावैं निकट चूक क्षमा करि पीय ३५२
तुमहिं मह्यो किन श्याम भुज मैं बश भई निहाल॥
कालिह सोंह पुनि आज हरि चले आपनी चाल ३५३
देख चुकी मुख श्याम के मिलौं न तिन सौं भूल ॥
अब जौलों तन प्राण हैं सहौं बिरह की शूल ३५४
मैं ठानी मन आपने करूं न तिन को संग ॥
अंजन मृगमद नील पट परस करौं नहिं अंग ३५५
अलि पिक बैनन करि श्रवण नील जलज नहिं हाथ
सुनत प्रिया की बात सब खरे पौरि ब्रजनाथ ३५६

सखी कहत कीजे न हठ यह यौवन दिन चारि।
याको गर्व करत कहा नवल प्रिया की नारि ३५७
इतो प्रेम धन तो अधिक सो कहँ दियो गवाँय।
कहत रही रूसौ नहीं अब नित बैठ रुसाय ३५८
जल ते न्यारी कौन विधि कहियत प्रिया तरंग॥
रस रूसन मनु ओस कण रहे न नित इक रंग ३५९
तुम वे एक न दोय हौ कह्यो हमारो मान ॥
चतुर नारि मिलु पीय सों छाँड़ि मान अभिमान ३६०
करत खनावन सकल तुम आइ बनावन बात ॥
बहुत सही घर जाउ चुप कहत प्रिया रिसगात ३६१
तुम पुनीत पावन खरी जिन को भावत श्याम॥
भरी रोष यह कहि वचन मोहिं न तिन सों काम ३६२
गई सखी हरि सों कह्यो तजत मान नहिं वाम ॥
याकों सबै मनाय हम करहु यतन कछु श्याम ३६३
कियो रूप तिय श्याम ने गये प्रिया के पास ॥
सखि मिस बैठि निकट कह्यो अबला लागि सुखरास
मैं गइ बन घनश्याम लखि अति आरति सुनि बाम।
इकल खरे द्रुम डार गहि रटत तिहारो नाम ३६५
देखि दशा तहँ तें फिरीं तिन कूँ सुधि नहिं ओर।
कहत कृपा प्रिय कीजिये पुनि पुनि करत निहोर ३६६
तो कारण नँदलाल ने परसे मेरे पाँय॥

सो मैं तुम्हरे पाँय परि हरि अपराध समाय ३६७
जो चाहत हरि को कियो दराड देउ सब मोहिं ॥
अहो हठीली छाँड़ि हठ हाहा बिनवत तोहिं ३६८
क्षण परसत प्यारी चरण क्षण क्षण करि बलिहार
हाहा सुख मनवत प्रिया प्यारे नन्दकुमार ३६९
चरित ललित नँदलाल के लखि सिहात सखि नैन
मन मन हँसि भरि प्रेम रस अति अनन्द हिय चैन ३७०
चितयो प्यारी नयन भरि हरि ललिता छर जान।
कहत श्याम छरि छंद गुण अजहुँ न छाँड़त बान ३७१
फिरि बैठी दे पीठ पुनि रहे लाल सकुचाय ॥
हृदय बिरह दुख बाम को कहत न प्रकट जनाय ३७२
रिस वश धरत न धीर मन पीरा बिरह अपार ॥
पट अंतर निज आरसी पीतम बदन निहार ३७३
इत नागर उत नागरी दोउ चतुर गुण खान ॥
प्यारी जित तित फेरि मुख पील मदन सयान ३७४
छुवन न पावत छाँहि हारि हारे करि छरि छन्द ॥
मान न छाँड़त माननी शोच बिबश नँदनन्द ३७५
प्रिया निकट लखि श्याम कूँ प्रेमाकुल अति दीन ॥
राधे हि समुझावन लगीं सखियाँ परम प्रवीन ३७६
तुब मय हरि तिय रूप धरि मधुरे बचन सुनाय ॥
कब के तोहिं मनवत खड़े सुख सों हाहा खाय ३७७

कियो और चाहत कहा पायँन लागे पीय ॥
आदर करि चितवत नहीं कियो निठुर कह जीय ३७८
मान किये कह्न पाय है आदर कह घटि जाय ॥
प्रीतम तजि कहुँ कीजियत बैरी राखि बसाय ३७९
बश करि पायो लाल को तासों अति इतरान ॥
कान्ह तोहिं समुझाइये भलो कहत तुव मान ३८०
मान मानिनी मान तजु मानहि रहि है हाय ॥
पछितैहै मन मान जब हियदहिहै रति नाथ ३८१
कह्यो हमारो मानरी ऐसे कहि है कौन ॥
भागि मान बश ह्वै पर्यो त्रिभुवनपति पति जौन ३८२
मान मनायो पीय को प्यारी समय विचार ॥
बहुरि समय कहँ पाइये नव यौवन दिन चार ३८३
ये दिन रूसन के नहीं पावस ऋतु गइ आय ॥
गरजगरान घन चपल चक चौंधित दामिनि धाय ३८४
मेघ वर्षि जल भूमि हित नारि न पिय अनुराग ॥
लपटत तरु वेली हुलसि सिन्धु प्रीति सरि भाग ३८५
यहि अवसर पिय संग मिलु कीजै सुखद बिहार ॥
उमगि प्रेम यह वचन सुनि प्रिय कछु रिस हि बिसार ३८६
नख लिखि कहि किन जात ह्वाँ बिके जिन्हन के हाथ
चित्त अनत नित श्याम को मुँह हा चही मों साथ ३८७
लाल तुम्हारे बिरद कूं करत साँचि जग गान ॥

निवरहोत निजहितुनसों प्यारी बिहँसिबखान ३८८
हँसीकुवँरिसखियनहरषिश्याम प्रफुल्लितगात ॥
मिस्यो बिरहदुखकहतसुखहाथजोरियहबात ३८९
हित्त चितजीवन प्राण तूअनुदिनकरिगुणगान ॥
मम पोषणतुमम्हदुवचनअबतजुप्यारीमान ३९०
कर जोरैं बिनती करौं कहे चरण शिर नाय ॥
यहसुनिकछुप्यारीहँसी बोली सखीसुनाय ३९१
रूप शीलगुण खान तुम रस नागर घनश्याम ॥
एक प्राण द्वै देह धरि प्रिया पीयसुख धाम ३९२
प्यारी के बिच पीय हैं पिय को प्यारी प्राण ॥
कबहुं कि रस में विरस परि करतकठिनकलकान३९३
परसो प्यारी के चरण हम सब देत मनाय॥
अबनरुठाबहुभूलहरिबहुरिमिलनकठिनाय३९४
परम प्रीति परसे चरण दीन होय नँदलाल ॥
छुट्योमानमिटिद्वन्द्दुख प्यारीभईदयाल ३९५
हर्षिमिलेदोउप्रेमरस निरखिसखिनसुखलीन्ह॥
उबटन्हवायशृँगारकरिभोजनअर्पणकीन्ह३९६
एकहिथार जिमायपुनि अचवन करि दै पान॥
सुमनसुगन्धितमालउरपहिरायीसुखमान३९७
लै बीरी निज हाथ सों दई प्रिया घनश्याम॥
मिलि बैठे दोऊ बिहँसि करत आरती बाम ३९८

राजत दोउ आनन्द भरि अरस परस छबि देख ॥
बिहँसि कह्यो प्रिय पीय सों करि मन साध विशेख ३९९
वर्षा ऋतु आई पिया रचहु हिंडोल सुरंग ॥
करहु आस पूरण सकल मिलि झूलैं तुम संग ४००
मुदित श्याम सुनि प्रिय वचन यहि विधि मान छुटाय
भक्त हेत लीला ललित निगम नेति तिन गाय ४०१
सुफल जन्म जग तासु को गावत गुण गुण सेन
युगल बिलास हुलास नित हिय निवास सुख चैन ४०२

हिंडोल लीला वर्णन ॥

भक्त वश्य हरि गाइये भक्तन हित अवतार ॥
भक्तन मन भाये करत ब्रज में सुखद बिहार ४०३
गये श्याम वृन्दाविपिन प्रिया सखिन के संग ॥
पावस ऋतु शोभा सरस यमुन पुलिन छबि रंग ४०४
बिहँसि कह्यो पिय सों प्रिया रचिये यहाँ हिंडोर ॥
बिश्वकर्मा छबिमय रच्यो आय सुनन्दकिशोर ४०५
परम सुहावन भूमि बन छबि हिंडोर नहिं पार ॥
चढ़े उमगि आनन्द भरि राधा नन्दकुमार ४०६
मोर मुकुट पीताम्बर श्याम अंग छबि चार ॥
प्यारी सारी बैंजनी चहुँदिशि कोर किनार ४०७
युगल अंग भूषण अमित सखियन रुचि पहिराय
रतन हार शोभा सरस सुमन हार उर लाय ४०८

गावैंसखि ऊँचे स्वरन बाजे विविध बजाय ॥
पिय प्यारी झूलैंहरषि लखि छबिहियो सिराय४०९
त्रण तोरैं लखि युगल छबि रीझत वारैं प्रान ॥
ब्रज सुन्दरि नव बाल सब सुनि पायो यह कान४१०
बृन्दाबन झूलैं दोऊ राधा अरु नँदलाल ॥
करि शिंगार आतुर चलीं घर तजि ब्रज की बाल४११
अरुण चहचुही चूनरी चुनि पहिरी ब्रजनारि
यूथ मेलि हरि पैं गई हर्षे युगल निहारि ४१२
निकट बुलावत आपने बचन सप्रेम सुनाय॥
इक बैठत इक पैंग चढ़ि इक झुलवत इक गाय ४१३
रह्यो छाय सुर बन सघन राग रंग सुख जौन ॥
लाजि कोकिला कंठ कल वरणि सकै कबि कौन ४१४
नख शिख भूषण तन लसैं युवति बृन्द चहुँ ओर।
भँवर भीर छाँड़त न सँग बसन सुगन्धन थोर४१५
नन्द नँदन सुख विमल शशि भूषण सुभग अभंग॥
युवति उमगि चहुँ ओर छबि उमगत सिंधु तरंग४१६
झकझोरा दें चाव भरि बाढ़त लटक हिंडोर ॥
लेत सुमन ऊँचे कुसुम हँसि हँसि नन्द किशोर ४१७
बढ़त पैंग डरपत प्रिया थमवत सौंह दिवाय ॥
जब नहिं सकत सँभारि तन लपटि पिया सों जाय४१८
हँसैं बाल लखि लखि चरित राखत पकरि हिंडोर॥

कोऊ उतरत कोउ चढ़त कोउ आतुर उठि दौर ४१९
राखैं रुचि हरि सखन की मधुर बचन सुख बोल ॥
कबहुँ अकेले आप ही झूलत लाल हिंडोल ४२०
कबहुँ झुलावत तियन कों मुरली मन्द बजाय ॥
नारिन सँग मिलि रसिकवर गावत रस बर्षाय ४२१
सजल मेघ झुकि गगन में परि फुहार श्रम हार ॥
अति सुगन्ध शीतल सुखद आवत सरस बयार ४२२
चातक पिक पिय पिय रटत शुक रटि राधा नाम ॥
गोपिन मिलि करि केलि हरि सब विधि पूरण काम ४२३
सुर गण लखि वर्षैं सुमन जय जय जय ध्वनि बोल
भक्तन वश ब्रज करत नित पूरण ब्रह्म कलोल ४२४
नित नव मंगल होत ब्रज नित लीला आनन्द ॥
धनि जिनके चित नित रहत गुण निधान नँदनंद ४२५

फाल्गुण समय वर्णन ॥

ब्रजजन हँसि पिय सों कहैं लखि लखि बारंबार ॥
ऋतु वसंत शोभा सरस वृन्दा बिपिन निहार ४२६
कर जोरैं विनवत सकल सुन्दर ब्रज की बाल ॥
पुरबहु हम अभिलाष सब रचहु फाग नँदलाल ४२७
यही अधिक मन साध है फागु खेल तुम संग ॥
हो हो होरी होय हरि पिचकारिन भरि रंग ४२८
ब्रजहि मचावैं फागु रँग हँसि बोले ब्रजराज ॥

तुमहूं प्यारी साज सजि हमहूं सजैं समाज ४२९
भई मुदित ये वचन सुनि श्रीमुख सों ब्रजबाल ॥
सखा वृन्द लिय बोलि सब सदन जाय गोपाल ४३०
केसरि किशांब रंग करि अतर अरगजा सान ॥
कंचन कलश अनेक भरि साधे विविध विधान ४३१
पीत अरुण तन बसन अरु भूषण ललित रसाल ॥
सुमन माल उर मराडली बनी रँगीली ग्वाल ४३२
ले गुलाल फैंटन भरी पिचकारी रँग हाथ ॥ ॥
नखशिख शोभा मन हरण नन्द सुवन ब्रजनाथ ४३३
बन्यो छैल नँदलाड़िलो सखा वृन्द चहुँ ओर ॥
होरी ब्रज खेलन चले मची धूम घन घोर ४३४
बाजत ताल मृदंग डफ मुँहचँग सहना बीन ॥
झोरिन अबिर गुलाल उड़ि गावैं नाच प्रवीन ४३५
ब्रज बीथिन बीथिन फिरैं हो हो होरी बोल ॥
बचत न मग नर नारि कोउ घर घर फरिका खोल ४३६
डारि अबीर गुलाल रँग छाँड़त करि मन भाय ॥
भाजि छिपैं लावैं पकरि रस की गारि सुनाय ४३७
अटा बैठि ब्रज नागरी पिचकारीन रँग मारि ॥
अबिर गुलाल उड़ाय पुनि देहिं दिवावैं गारि ४३८
महल अटारी रँग रँगे बीथिन कीच गुलाल ॥
लिये संग ग्वालन फिरत फागु खेलु नँदलाल ४३९

खेलत कूदतही चले बरसाने कूं श्याम ॥
कुँवरि राधिका पाय सुधि सखिन बुलायो धाम ४४०
बिहँसि कुँवरि सबसों कह्यो खेलैं हरि के संग॥
चलो पकरिये श्याम कों करि मन भाये ढंग ४४१
ललितादिक ब्रज सुन्दरी सज्यो साज ततकाल॥
युवति यूथ शोभित चलीं लैले रंग गुलाल ४४२
इत तें श्रीकीरति कुँवरि सखिन यूथ ले साथ॥
गही बाट आगे निकसि उत तें श्रीब्रजनाथ ४४३
दोउ दिशि रुकि ठाढ़े भये सखा सखिन को गोल॥
भौ भट भेरो आन पुनि हो हो होरी बोल ४४४
अबिर गुलाल उड़त तहाँ घटा अँधेरी छाय॥
दोउ दिशि जोरी चलि रही होत जराजर धाय ४४५
गये बसन तन सों चपकि रंग नहिं परत पिछान॥
सुख शोभा कहियत कहा छबि गुलाल झलकान ४४६
पिचकारी रंग सों भरे राधा नन्दकुमार ॥
तकि तकि मारैं परस्पर उर आनन्द अपार ४४७
गारी गावैं रस भरी सकुच रहित दोउ ओर॥
हूका मारैं ग्वालिनी ग्वाल भागि सुख मोर ४४८
सखिन बोलि प्यारी कह्यो रचिये कछु छरि छन्द॥
पकरो लँगर कान्ह कूं मांडो सुख अरविन्द ४४९
छाँड़ो हहा कराय के काजर नयन लगाव ॥

बसन चुराये आन इन ताकों लीजै दाव ४५०
सखि यक हलधररूप धरि गई निकट घनश्याम॥
लिये धाय औचक पकरि औरहु धाई बाम ४५१
अंकम भरि हँसि हँसि कहत ढीठो दई मुरारि॥
ताकों देहैं आज फल लैहैं दाँव बिचारि ४५२
दूरि खड़े उत ग्वाल हँसि इत वृषभानु कुमारि॥
बाढ़्यो उर कछु इक सकुच पिय को वदन निहारि ४५३
कोउ छोर्‌यो पट पीत कोउ काजर नयन लगाय॥
बेरागी शीश सँवारि मुख रंग गुलाल सुहाय ४५४
चले भागि छुटि हाथ ते मिले सखन सों श्याम॥
लेन न पाई दाव हम पछितावत लखि बाम ४५५
भजे आज बचि काल्हि क्यों कियो जो हम सों श्याम।
दाँव लेहिंगी आपनो कहत सकल ब्रजबाम ४५६
लेउ आपनो पीत पट अब नहिं पकरैं लाल॥
कहत श्याम सों लाउ पट तारी दै हँसि ग्वाल ४५७
सखा एक तिय रूप करि पठयो श्याम सुजान॥
गयो तियन के यूथ मिलि करिके अधिक सयान ४५८
कहत न दै पट श्याम को राखौं याहि दुराय॥
ऐसे कहि पट कर लियो दियो लाल को आय ४५९
फेर्‌यो कर सों श्याम ने चकित भई लखि नारि॥
युवति परस्पर कहत हम कीन्ही श्याम गवाँरि४६०

कह्यो तियन नँदलाल सों भरी प्रेम अनुराग।
कहियो लेहिं न दाँव जोलगी आन अवलाग ४६१
तुमहिं नचावैं पकरि हरि तो हम ब्रज की नारि ॥
कहत कान्ह कछु भय नहीं करिहौ कहा हमार ४६२
सखी कहावत जिन्हन की करत हुं तिन की कान।
छांडूं विनय कराय अब देउँ ग्वाल लपदान ४६३
तुम्हें सौंह है नन्द की करो न तुम ये काम।
ले पिचकारि सखन सहित कर्षे सुन्दर श्याम ४६४
इकठौरी ह्वै नागरी नौलासी लै दौर ॥
मारि हटायो सखन को भाजे नन्दकिशोर ४६५
तियन बिहँसि तारी दई भाजे मोहनलाल ॥
नाम लजायो बाप को सुनि पुनि फिरे गोपाल ४६६
शिथिल करी ब्रज गोपिका झोरिन मारि अबीर।
रसिक पुरन्दर साँवरे सखन संग अतिभीर ४६७
होरी खेलैं मिलि सकल दोउ दिशि मगन हुलास ॥
अरस परस छबि लखि मुदित दंपति रस की रास ४६८
सुरगरा लखि बर्षें सुमन जयजय करि यशगाय॥
ललिता आय कहे वचन सुनहु कुवँर ब्रजराय ४६९
औचकि आये श्याम तुम हम काहू नहिं जान ॥
करी ढिठाई अधिक ह्वी साँझ भई नियरान ४७०
काल्हि हमारी बार है रहियो सजग गोपाल॥

नन्दगावँ चढ़ि धाय हैं खोलि सुनायो बाल ४७१
खेल अवधि बदि प्रात की सखियन राख्यो मान॥
दीन्हो मोहनलाल को लै प्यारी सों पान ४७२
मगन खेल गावत हँसत घर आये घनश्याम॥
सखिन संग आनन्द भरि कुवँरि पधारी धाम ४७३
लोक लाज कछु भय नहीं कथा केलि सुखलीन।
श्री राधा कीरति कुँवँरि सखियाँ प्रेम प्रवीन ४७४
प्रातहि कियो विचार मन चलें नन्द के धाम ॥
होरी खेलैं श्याम सों सुफल होहिं मन काम ४७५
भाँति अनेकन अरगजा मथि सुगन्ध करि लीन्ह।
रँग गुलाल भरि भरि कलश काँवरियन सँम कीन्ह ४७६
सोंज खेल सब ले चले काँवरि भरे कहार ॥
कियो कुवँरि सखियन सहित नवसत साजि शिंगार ४७७
प्यारी सब नँदनन्द की शोभा अमित अनूप ॥
हाथ लिये सुमनन छरी बाम छबीली रूप ४७८
तिन में श्री राधा कुवँरि राजत अति अभिराम ॥
होरी खेलन संग हरि चलीं नन्द के ग्राम ४७९
प्रेम प्रीति के रस पगी प्रिय के भरि अनुराग ॥
बाजे सुघर बजावहीं गावैं होरी राग ४८०
करत केल कौतुक अधिक अबिर गुलाल उड़ाय।
नन्द धाम घेर्यो सकल सुधि पाई ब्रजराय ४८१

हलधर ग्वाल बुलाय सब बाहिर आय गोपाल ॥
होरी खेल मच्यो अधिक इक दिशि नर इक बाल ४८२
पिचकारी रँग सों भरैं म्रगमद कुंकुम घोर ॥ ॥
झोरिन अबिर गुलाल उड़ि अरस परस झकझोर ४८३
रही घटा घन छाय छबि मची केशर की कीच ॥
कोउ पकरत कोउ भाजि छुटि निलज गारि मुख बीच ४८४
पकरन हित नँद नन्द के औचकि धाईं बाम ॥
भाजि गये छरछन्द करि लिये पकरि बलराम ४८५
ढोरि रंग शिर मांड मुख काजर दृगहिं लगाय ॥
फगुवा लेसन भावतो छाँड़े विनय कराय ४८६
हँसत सखन मिलि साँवरो दोऊ आँखि अँजाय ॥
युवतिन हलधर सैन सुनि पकरे मोहन धाय ४८७
सिमिटि सखा छुटवन चले सखिन मारि दिये ढारि ॥
लै आईं प्यारी निकट मुदित निरखि ब्रजनारि ४८८
कहैं कहो कैसी बनी मोहन नन्दकिशोर ॥
चीर हरण को दाँव अब लेहिं बसन पिय छोर ४८९
कालिह कह्यो करि हौ कहा बहुतै गाल बजाय ॥
लगी बजावन बाँसुरी छोरी तिय मुसकाय ४९०
एक लियो हरि पीत पट चन्द्रावलि गहि हाथ ॥
काजर ला संभावली प्रेम प्रीति के साथ ४९१
ललिता लै लोचन दियो श्रवणान कहि इक भाग ॥

इक गहि चिबुक उठाय सुख परसि कपोल सभाग ४९२
काहू कबरी गूंथ शिर मोतिन माँग सुधार ॥
पहिरावत लहँगा कोऊ कोउ अँगिया उरधार ४९३
निरखत छबि प्यारी हँसें कथा बड़ाई राखि ॥
लावे ठाढ़े प्रिय निकट बधू बधू कहि भाखि ४९४
मुदित प्रिया प्रिय सुख निरखि पिया रहे सकुचान ॥
पुनि प्यारी निज पाणि ले पिय को दीन्हों पान ४९५
गाँठि जोरि अंचर दई सखियन सहित कलोल ॥
कहैं रहो ब्रज में सदा जोरी युगल अडोल ४९६
लिये मध्य घनश्याम को मगन बाल चहुँ ओर ॥
अरस परस दोउ मुदित छबि राधा नन्दकिशोर ४९७
गारी गावैं नन्द को आनन्दित ब्रज नारि ॥
बजत मजीरा तारि डफ़ खेल केल सुख सारि ४९८
ललिता को बोल्यो भवन यशुमति करि सनमान ॥
ल्याबहु अब घर लाडिली कीरति जू की आन ४९९
ललिता राधे हि ले चली निकट यशोमति माय ॥
सकुचमान नँदलाल तब छूटे हाहा खाय ५००
हँसे ग्वाल तिय रूप लखि भुज गहि चले लिवाय ॥
देखि हँसैं नँदराय जू हर्ष माय उर लाय ५०१
किन कीन्हे ये हाल ही ऐसी ब्रज की बाल ॥
सकुचित ह्वै भोरे भये मन मन हँसत गोपाल ५०२

कियो दूर तिय रूपही धर्यो श्याम निज रूप।
मुकुट शीश कटि पीत पट शोभा सरस अनूप ५०३
सखिन सहित कीरतिकुँवरि यशुमति भवन पधारि
नँदरानी सब कूँ दिये भूषण बसन अपारि ५०४
प्यारी को निज हाथ सों हित करि कियो शिंगार।
निरखि भई बलिहारि पुनि राई लौन उतार ५०५
सादर सब की गोद भरि मधु मेवा अरु पान ॥
फगुवा कह्यो सो दीजिये यशुमति बचन बखान ५०६
ललिता कहि नहिं और कछु कान्ह रही को लेहिं ॥
देखन कूं पुनि जो चहौ तौ हम माँगे देहिं ५०७
बढ़ो बंश नँदराय को जिवहु श्याम बलराम ॥
जिनते ब्रज यह सुख लहै मुदित अशीषत बाम ५०८
चले न्हान श्री यमुन तट मिलि के गोपी ग्वाल ॥
सुखद छाँडि शीतल तहाँ रच्यो डोल नँदलाल ५०९
झूलत दोऊ रँग भरे गावत मिलि नर नारि ॥
कियो दूर श्रम खेल को यमुन केल सुख सारि ५१०
महिदेवन शिर तिलक करि पायो बहु बिधि दान ॥
आनँद भरि बर्षे सुमन सुरगण गगन बिमान ५११
लूटि फागु सुख श्याम सँग फूरणा ब्रजजन काम ॥
मुदित गये निज निज सदन घर आये घनश्याम ५१२
सुखद चरित नँदलाल के हरि भक्तन सुख दैन ॥

हरि पद रति पद पाइये मुनि गावैं दिन रैन ५१३

विद्याधरशापमोचन॥

दीनदयालु कृपालु चित भूमि उतारन भार ॥
भक्तन हित युग युग सदा प्रकट मनुज अवतार ५१४
यश पुनीत पावन परम गावैं सुर मुनि सन्त ॥
कर्त्ता हर्त्ता आप हरि लीला सुखद अनन्त ५१५
हरि प्रेरित नँदराय जू लीन्हें संग अहीर ॥
सादर शंकर पूजि सब रहे सरस्वती तीर ॥ ५१६
गह्यो पावँ नँदराय को अजगर आधी रात ॥
ब्रजबासी हारे सकल छुटवत नाहिं छुटात ५१७
कृष्णकृष्ण गुहराय मुख अति आकुल नँदराय ॥
भये व्याकुल ग्वालन तुरत दीन्हे श्याम जगाय ५१८
निकट जाय परसाय पद पाय शाप करि नाश ॥
दिव्य रूप तजि ब्याल तन गायो गुण सुखराश ५१९
देखि नन्द अचरज भये पूँछ्यो सबहीं भेव ॥
शाप अंगिरा मुनि कृपा परसन पद हरि देव ५२०
विद्याधर वर्णन कियो मुनि प्रभु पद शिर नाय ॥
गयो लोक निज हर्ष उर गावत यश ब्रजराज ५२१
नन्दादिक आनन्द सब तहाँ भई निशि बीत ॥
हरि गुण गावत परस्पर महिमा देखि पुनीत ५२२
प्रात होत आये सदन संग श्याम बलराम ॥

यश पुनीत ब्रजराज को फैलिरह्यो ब्रजधाम ५२३

शंखचूड़. हयभासुर. केशी. व्योमासुर वध ॥

शंखचूड़ कूँ मारि हरि गोपिन लियो छुडाय।
हरण सकलभयभीरजनदुष्टदलन ब्रजराय ५२४
हयभासुर सों युद्ध करि पलमें कियो बिनाश ॥
जयजय करि वर्षें सुमन सुरगण चढ़े अकाश ५२५
अश्वरूप आयो असुर केशी ताको नाम ॥
ताके सुख करनाय हरि कियो स्वजन को काम ५२६
धनि धनि हरि ब्रज अवतरे भक्तन के हितकार ॥
गावत यश सुर मुदित नभ ब्रज घरघर नरनारि ५२७
व्योमासुर बन आय के ग्वालन लियो चुराय ॥
देखि कपट घनश्याम ने झटपट पकर्यो धाय ५२८
पटकि भूमि बिन प्राण करि पठै स्वर्ग को दीन।
बालक शोधन हरि चले मिल नारद परवीन ५२९
लगे बजावन वीन ऋषि गावन यश विस्तार ॥
कंस मारि अब कीजिये दूर भूमि को भार ५३०
ऋषि मुख सुनि सब ही कथा सुधा वचन मुख खोल
जाउ बेगि सुनि लेहु मोहिं न्दपकहि मधुपुरि बोल ५३१
करि प्रणाम हरि कों चले ऋषि नारद हर्षाय।
जो वाणी ऋषि कहि गये हलधर वही सुनाय ५३२
अविनाशी अद्वैत तुम अविगत अरु अविकार ॥

अखिल लोक नायक लियो जन्म उतारन भार ५३३
संकर्षण के वचन सुनि हँसि बोले घनश्याम ॥
जो तुम कह्यो सो सत्य है करूं कंस को काम ५३४
बालक लाये खोजि हरि भरे परम आनन्द ॥
साँझ समय आये सदन जगवन्दन नँदनन्द ५३५

अक्रूर आगमन॥

मुख उदास कछु मारि मन गये ऋषी नृप पास॥
वरणो गुण नँद नन्द के उपजायो उर त्रास ५३६
कंसराय निश्चय कियो ऋषि मम हित हि बखान।
मथुरा बेगि बुलाय हूं राम श्याम जिय ठान ५३७
पर्यो शोच उर में यही मारौं यहाँ बुलाय ॥ ॥
चढ़ि धाऊं ब्रज करत मन हरि गुण समुझि डराय ५३८
आतुर ह्वै अक्रूर कों बोलि निकट एकान्त ॥
कह्यो भेद जिय को सकल खोले सबै वृतान्त ५३९
मन मन कहि अक्रूर यह भावत कहा भुवाल ॥
करि विचार बुलवत निकट आपहि अपनो काल ५४०
कहि न सक्यो कछु नृपति डर कह्यो धन्य महाराज
नन्द सुवन दोउ शत्रु हैं करहु बेगि यह काज ५४१
शुफलक सुत के वचन सुनि हरष्यो जिय अधिकात
मतो करत बीती तहाँ नृप को आधी रात ५४२
शुफलक सुत घर को गये पर्यो सेज नृपराय॥

लगी आँखि लखि सपन में काल रूप दोउ भाय १४३
झझकि उठ्यो भरम्यो नृपति भयो अधिक भयभीत।
घर आँगन बैठत उठत कीन्ही निशा व्यतीत १४४
पठऊँ ब्रज अक्रूर कों करि विचार नृप जीय ॥
क्षण क्षण युग बीतत कठिन धरत धीर नहिं हीय १४५
इत देख्यो नँदराय जू सपन कहत ब्रजलोग ॥
श्याम राम ब्रज तजि गये रोवत विरह वियोग १४६
जागि झझकि धकधक हृदय ढारत नयनन नीर ॥
कह्यो न यशुदहि भेद कछु श्याम देखि उर धीर १४७
प्रातहि नृप अक्रूर कूँ सादर निकट बुलाय ॥
शिरोपाव पहिराय निज दीन्हों रथ पलनाय १४८
रथ चढ़ि ब्रज सन्मुख चल्यो शीश नाय अक्रूर ॥
नृप ने तहँ जोरे सकल मल्ल असुर रण शूर १४९
रंगभूमि रचना रच्यो सावधान सब कोय ॥
मों हित एक मचानहू रच्यो जो ऊँचो होय १५०
एक पौर गज कुवलया धनुष दूसरी ओर ॥
रखवारे बहु भट तहाँ सजग बली बहु ठौर १५१
दोउ बालक आवें जबै कहियो धनुष उठाय ॥
घेरि मारि लीजो तहाँ भीतर चलन न पाय १५२
जो कदापि वह तें बचें तौ गज चरण रुँदाय ॥
रंगभूमि आवैं नहीं मल्लन कहत सुनाय १५३

मेरे सुत सज्ञान हैं धनुष देखि कह्न जान ॥ ॥
कियो कपटकछु नृपति ने मो कों परत पिछान ५७५
महतारी कूँ दुखित करि क्यों मोहन घनश्याम ॥
मथुरा जाउ न लाड़िले कहा तुम्हारो काम ॥ ५७६
परी धरणि मुरझाय यों यशुमति वचन सुनाय ॥
मोहि तजि करि सूनो भवन निठुर होत ब्रजराय ५७७
घरहू आवत नाहिं हरि मिलि बैठे अक्रूर ॥
को राखे कान्हें कहूं यशुमति कहत बिसूर ५७८
धम जो रहैं अब प्राण तन कहैं यही ब्रजबाम ॥
अहो दई कैसी करी चलन चहत घनश्याम ५७९
करि विचार नन्दादि सब करिये कहा उपाय ॥
को जाने नृप मन कहा आयसु मेटि न जाय ५८०
वृद्ध गोप बोलत भयो हरि प्रभाव जिय जान ॥
कहे श्याम सोइ कीजिये गर्ग वचन परिमान ५८१
सुमिरत गुण नँदलाल के महिमा अमित बखान।
कितिक धनुष अरु कंस हरि करिहैं निज मनमान ५८२
नृपति जो कछु करिहै कपट हरि सामर्थ्य अपार ॥
कालहु के ये काल हैं हलधर नन्दकुमार ५८३
सुनत बचन हरि गुण सम्रुझि हर्षे सबै अहीर ॥
सब लायक दोउ बीर हैं यहै जानि धरि धीर ५८४
बारबार यशुमति कहति अबहीं बारे कान्ह ॥

मधुपुरि हत्यारे बसत मल्ल महा बलवान ५८५
हलधर क्यों नहिं भ्रात कों समुझावत हो लाल।
रहे कौन विधि प्राण तन तुम बिनु जननी काल ५८६
कहत राम सुनु मात तू मतिहि कंस भय मान
बारे समुझ न कान्ह को करि विचार जिय जान ५८७
तो देखत हनि पूतना शकट तृणा बक मार॥
अघ अरिष्ट केशी दुखद बत्स असुर पछार ५८८
विष जल ते गो ग्वाल रखि गोवर्द्धन कर लीन्ह।
महा प्रलय जल इन्द्र को कोप निवारण कीन्ह ५८९
तू कत शोच करत वृथा हरि सम बली न और॥
धरो धीर ऐहैं बहुरि क्यों नयनन जल ढोर ५९०
सुनि चरित्र जिय कहति यों जो कछु करैं सो होय॥
मैं लेजै हौं संग निज कह्यो नन्द पुनि सोय ५९१
धनुष यज्ञ दिखराय पुनि लै ऐहौं दोउ भ्रात॥
ऐसेहिं सबको बीति निशि ह्वै आयो परभात ५९२

मथुरा को गमन॥

हरि आयसु अक्रूर ने लीन्हो रथ पलनाय॥
परी धरणि बिलपति बिकल कहति यशोदा माय ५९३
वृद्ध समय की लकुटिया श्याम राम दोउ बीर॥
श्वफलक सुत ले जात हरि धर्म छाँड़ि नहिं पीर ५९४

ब्रजबनिता गदगद बचन दृगन नीर बिलखान ॥
लिये जात अक्रूर अब हमरो जीवन प्रान ५९५
पायँ परसि हरि राखिये समय चूक पछिताय ॥
करौं बीनती श्याम सों रो मरिहैं दुख पाय ५९६
बिरह बिकल लखि गोपिकन चिते कमलदल नैन ॥
डारि ठगोरी मृदु हँसन चितवत खरी अबैन ५९७
तेहि अवसर प्रभु रथ चढ़े सुफलक सुत चढ़ि धाय ।
पुत्र पुत्र टेरन लगी देखति यसुदा माय ॥ ५९८
लेउ लाल इक बार सुनि जनम खेर तन हेर ॥
बहुरि किये तुम जाति हौ ब्रज में श्याम अँधेर ५९९
माय यशोमति बिकल लखि देखि दुखित ब्रजलोग
बहुरि मिलन श्रीमुख बचन दियो धीर सुखयोग ६००
भूमि उतारन भार हरि चिते मधुपुरी ओर ॥
रथ हाँकन अक्रूर सों सैन नैन की कोर ६०१
बार बार यसुदा कहति बिलखि बिलखि तेहि काल
हितू कौन ब्रज या समय राखै चलत गोपाल ६०२
यह कहि महि लोटत बिकल और दुखित ब्रजबाल
रहीं देखत कलाय रथ मथुरा गमन गोपाल ६०३
गयो दूर रथ धूर हू भई दृगन की ओट ॥
कहा करैं घर जाय कहि परी मुरछि महि लोट ६०४
बिरहा रस माती बिकल कहन लगीं मुख बात ॥

दियो न क्यों विधिना हमैं पवन धूरि को गात ६०५
कै हम को करतो कछू रथही को कोउ अंग ॥
तौ सुखेन जाती चलीं नँद नन्दन के संग ६०६
हरि बिनु ब्रज सूनो भयो दुख मानै धुनि माथ ॥
है अजान कहॢ नर रथ गह्यो चलत में हाथ ६०७
यों ब्रज तिय पछिताय मन लाईं यसुदहि गेह ॥
हरि बिनु परम उदास सब सुख मलीन कृश देह ६०८

अक्रूर शोच निवारण ॥

चले नन्द गोपन सहित ग्वाल सखन बहु भीर ॥
शोच बिवश अक्रूर उत पहुँचे यमुना तीर ६०९
धृग धृग अपनी बुद्धि कों कहि कहि मन पछिताहिं
लिये जात हूं कंस पै श्याम राम भलि नाहिं ६१०
भक्त हृदय संशय जबै जान्यो श्याम सुजान ॥
हमैं कलेऊ देउ पुनि तात करो अस्नान ॥ ६११
यह कहि हरि कौतुक प्रकट महिमा अमित अनूप
दिखरायो अक्रूर को जल में अपनो रूप ६१२
नाशी चिन्ता चित्त की बाढ़्यो मन आनन्द ॥
लग्यो करन अस्तुति तहाँ करि बखान रचि छन्द ६१३
हूं अजान जगदीश हरि तुव गुण रूप अनन्त ॥
करि अस्तुति चरणन पस्यो मोह रहित निश्चिन्त ६१४
अन्त रहित जल में भये लीला सागर श्याम ॥

जबजलतेबाहिरनिकसिश्रफलकसुतश्रभिराम६१५
हर्त्ता कर्त्ता जगत के श्याम राम सुख राश ॥
कहतमनहिमन हर्षउर कौरेंखलन को नाश ६१६
ये हरि पूरण ब्रह्म हैं इन सम और न आन ॥
कहाकंसकहाकुबलया कहा मल्ल बलवान ६१७
चल्यो हाँकि रथ हर्ष अति आनि मिले तब नन्द ॥
प्रथम शोच आनन्द अब बूझयो श्री नँदनन्द ६१८
कहन लग्यो बूझयो कहा श्री पति त्रिभुवननाथ ॥
दुष्टदलनसन्तनसुखद निगम नेतिगुणगाथ ६१९
नगर निकट पहुँचे दोऊ रथ बैठे छवि छाज ॥
कंस दूत नृप सों तबै कह्यो जो आये राज ६२०
रंगभूमि मल्लन गयो समाचार सुनि कान ॥
सुभट मल्लबहुतक असुरठामठाम सजिगान ६२१
आवन नन्द कुमार को पर्यो नगर में शोर ॥
सुनि धाये नर नारि सब देखन कूं चहुँ ओर ६२२
कियो प्रवेश नगर जबै राजत रथ दोउ वीर ॥
नारिनलखिचढ़ि चढ़ि अटारथसँगपुरजनभीर६२३
देहिं अशीश मनाय सुर निरखि रूप नरनारि।
करैजो नृप इन सों कपट तो ह्वैहै जरि छारि ६२४
मन भावन यों दे दरश उतरे बाग मँझारि ॥
गोपसखानन्दादि सब राखे तहाँ मुरारि ॥ ६२५

हरि आयसु अक्रूर तब गये नृपति के पास ॥
ग्वालबाल बलराम सँग मोहन सहितहुलास ६२६
गये यमुन तट मुदित हरि बाल केलि के संग।
लजि अनंग कोटिक निरखि गोरश्याम छबि अंग ६२७

रजक बध. धनुष भंजन. कुबलया बध ॥

प्रथम जाय लूटे बसन कीन्हों रजक निहाल।
आप पहिर ग्वालन दिये आगे चले गोपाल ६२८
मिलो एक दर्ज़ी तहाँ चरण कमल धरि माथ॥
घाट बाढ़ि सम करि बसन पहिराये ब्रजनाथ ६२९
ताको कृत प्रभु मानि मन दियो भक्ति को दान
माली पूरण काम हरि पहरि हार हरषान ६३०
कुबजा सों चन्दन लियो दीन्हों रूप अनूप॥
भई रूपगुण आगरी मोही श्याम स्वरूप ६३१
सहजहि करि भंजन धनुष असुर मारि नँदलाल।
लीन्हे दन्त उखारि पुनि हन्यो कुबलयाव्याल ६३२

मल्ल युद्ध. कंस को हनन ॥

द्विरद दन्त धरि कन्ध निज श्याम राम दोउ बीर॥
चले जहाँ जुरि मल्ल सब गोप बाल सँग भीर ६३३
यथा भाव दरशे सबन रंगभूमि प्रभु जाय ॥
कम्प उठ्यो भय भीति नृप काल रूप दरशाय ६३४
लिये घेर चहुँ ओर सों असुर भीर दोउ लाल ॥

बोलि उठ्यो चारानूर हँसि आवहु मदनगोपाल ६३५
करि बखान तुम्हरो जगत सुनत रहे हम नाम ॥
लरो अखारो आज हरि पस्यो जो हमसों काम ६३६
हमैं खेल सों काम है बाल वेष हम देख ॥
अयु गति यह ब्योहार है और आपनी पेष ॥ ६३७
जान देउ रोकत वृथा हम कों नृपति बुलाय ॥
ठाढ़े असुर समूह मधि यों कहि श्याम सुनाय ६३८
मल्ल युद्ध तुम सों लरैं करैं नृपति को काज ॥
ऐसे हरि सों कहत सब सजैं युद्ध को साज ६३९
लपट झपट भुज सों भुजा शिर सों शिर दृग जोर ॥
हलधर सँग मुष्टिक भिरो हरि चारानूर कठोर ६४०
गहन घात पावें नहीं छूटत पुनि लपटात ॥
मल्ल तिन्हें चाहत गहन शिव विधि गहे न जात ६४१
मल्ल युद्ध जीतें कुँवर पस्यो कटक में शोर ॥
जिमि उडगण रवि उदित ही छिपे असुर मुख मोर ६४२
मल्ल मारि राजत खरे रंगभूमि दोउ बीर ॥
देखि कंस भयभीत अति कम्प गात नहिं धीर ६४३
देन लग्यो सेना पतिन क्रोध सहित मुख गार ॥
कित हि गये योधा सकल हतें जो नन्दकुमार ६४४
तनक छोहरन अहिर के मल्ल दिये सब मार ॥
भय तजि इत आवत चले मारो कहत पुकार ६४५

नृप भय धाये असुर सब अस्त्र शस्त्र करि पानि
लखिपुरजनव्याकुलमहामनमेंअधिकडरानि ६४६
आवत लखि असुरन भिरे हाँक मारि दोउ बीर ॥
गज गरा के ऊपर परे ज्यों केहरि मति धीर ६४७
सुन्यो शब्द गंभीर हरि सेना पति हिय हारि ॥
क्रोधयुक्तबललपकगहिपटकिपटकमहिमारि ६४८
चटक गहन धावन चपल असुरन पटकि पछार ॥
दुष्ट दलनकौतुक अमितहरतभूमि को भार ६४९
चहूँ ओर खल भल पर्‍यो भय व्याकुल नृपकंस ॥
कीजे कहा उपाय अब बढ़्यो अधिक उर संस ६५०
क्षरा बैठत क्षरा उठत नृप दियो धीर सब डार ॥
मारे सकल असुर दोउ हलधर नन्द कुमार ६५१
पुनि सकोप नृप ओर लखि चढ़ि गये मचकि मचान
बाजझपटदेखत सकल चकित कंस भयमान ६५२
मारि लात घनश्याम ने भू पर दियो गिराय ॥
तापर कूदे आप हरि सुन्दर रूप दिखाय ६५३
सो स्वरूप दे कंस को पठे स्वर्ग्ग हरि दीन्ह ॥
मर्‍यो कंस हर्षित सकल जयध्वनि सुरगरा कीन्ह ६५४
अष्ट भ्रात नृप राय के धाये लरन सकोप ॥
ते सब श्री बलदेव जू कीन्हे तहाँ अलोप ॥ ६५५
श्याम केश गहि कंस को दियो यमुन जल डारि ॥

नाम घाट विश्राम परि करि विश्राम मुरारि ६५६
गये तहाँ दोउ भ्रात पुनि जहाँ हुतो रनिवास ॥
विविधभाँतिसमुझायहरिरानिन दियोदिलास६५७
उग्रसेनपुनि आय मिलि राखि चरणपर शीश ॥
दीन बचनसुनिहर्ष अतिकृपाकरीजगदीश ६५८
उग्रसेन राजा कियो निज कर चमर दुराय ॥ ॥
युगयुग प्रभु भक्तन सुखद जन कों देत बड़ाय ६५९
लखिलखिसुखपायोसकल श्रीमथुरानरनारि॥
अब दैहैं पितुमातु सुख घर घर यही बिचार ६६०
कंस मारि मही भार हरि उग्रसेन दै राज ॥
मात पिता की सुरति करि तब बोले ब्रजराज ६६१
उग्रसेन अक्रूर युत सँगही गये लिवाय ॥ ॥
दियो दरश पितु मातु कों जन्म समय दरशाय ६६२
मिले धाय पितु मातु सों कहि हम सुवन तिहार॥
आये मल्ल पछारि सब कंस मारि भय टारि ६६३
यह कहि श्री मुखसुख दियो पगबन्धन दियेकाढ़ि
तबदम्पति निश्चय कियो अति अनन्द उरबाढ़ि ६६४
कराठ लपटि रोवन लगीं कहत देवकी माय ॥
द्वादश वर्ष रहे कहाँ मैं नहिं गोद खिलाय ६६५
भयेप्रेम वश दुखित लखि मातु वचन करि कान॥
लिखो मिटै नहिं कर्म्म को बोले अति सकुचान ६६६

मति करु मात विषाद चित अब पुरवैं मन साध।
कहन लगे श्री सुख वचन करुणा सिन्धु अगाध ६६६

श्री वसुदेव जी गृह जन्मोत्सव ॥

पुत्र जन्म जग में सुखद तुम कों भयो कलेश ॥
वृथा जन्म है तासु को पिता मात दुख देश ६६८
सो अब दोष न मन धरो होनहार बलवान ॥
तजो शोक आनन्द उर सुफल मनोरथ मान ६६९
पुत्र वचन सुनि मातु अति उर आनन्द बढ़ाय ॥
बार बार गहि तात को लै लै कराठ लगाय ६७०
हर्षित ह्वै वसुदेव जू बोलि विप्र परि पाँय ॥
जन्म समय संकल्प करि दई लक्ष ते गाय ६७१
बन्दीजन आये सुनत पायो बहु बिधि दान ॥
श्री वसुदेव उछाह मन परितोषे सन्मान ६७२
कियो जन्म उत्सव तहाँ गाये मंगलचार ॥ ॥
द्वार द्वार वाजन बजे सुरजन हर्ष अपार ६७३
करि शृंगार गावैं मुदित साजैं मंगल थारि ॥
आवैं श्री वसुदेव गृह उमगि उमगि सब नारि ६७४
ले ले आवैं भेट सब भई भवन अति भीर ॥
नाचत नट गावैं गुणी फुल्लित पुलकि शरीर ६७५
तब जननी दोऊ सुतन करि उबटन अन्हवाय ॥
निज कर अंग अंगोछि पुनि सरस शृंगार सजाय ६७६

हुते ग्वाल जे संग हरि तिन्हैं देवकी माय ॥
जानि कृष्ण प्रीतम सबै निज हाथन पहिराय ६७७
ग्वाल बाल चकित सकल लखि मन करत विचार
कृष्ण देवकी पुत्र हैं नाहिं न नन्द कुमार ६७८
चौक बैठि दोऊ कुँवर विप्र वृन्द तहँ आय ॥
विधिवत पूजि तिलक दियो बहुतक दान सुहाय ६७९
मात उतारें आरती लखि छबि सुख नर नारि ॥
महि देवन करि वेद ध्वनि न्योछावर विस्तार ६८०
विष्णु सहित सुर यश कहैं बर्षैं सुमन सुहाय ॥
बाजि रहे नभ दुन्दुभी जय जय जय सुख गाय ६८१
बहुरों सखन सहित दोउ निज कर परसि जिमाय ॥
पूरि सकल मन कामना मातु निरखि बलि जाय ६८२
मात पिता कूँ सुख दियो यहि विधि कंस निपात ॥
घर घर श्री मथुरा पुरी लघु दीरघ हर्षात ६८३
फैल्यो यश तिहुँ भुवन में पावन परम रसाल ॥
जल थल सुर नर नाग सब जीवन भये निहाल ६८४
मारन कंस पुनीत यश गावैं सुनैं जो नित्त ॥ ॥
सुफल होहिं मन कामना कृष्ण चरण रति चित्त ६८५
अनुदिन गावैं हरि कथा नर तन पाय सुजान ॥
सुन्दर यश ब्रजचन्द को सकल सुखन की खान ६८६

कुबजा गृह गमन॥

दीनबन्धु भक्तन सुखद यदुपति जन हितकार॥
नृपति भवन तजि के चले कुब्जा सदन पुकार ६८७
नारि पुरुष नहिं भेद कछु ऊँच नीच नहिं मान॥
बिवश बिकाने हाथ जेहिं साँच भाव जिय जान ६८८
टेढ़ी तें सूधी करी दीन्हों रूप अनूप॥ ॥
दासी ते रानी भई पति पायो ब्रज भूप ६८९
कुबजा प्यारी कथा की घर घर होत बखान
ताकी भाग्य सराहना करि सुर नारि सिहान ६९०
बसे श्याम कुबजा सदन पूरण सब मन काम॥
पुनि आये वसुदेव गृह करि बिचार घनश्याम ६९१
ब्रज बासिन की सुरति करि लिये संग वसुदेव॥
गये जहाँ नृपराज हीं श्री मोहन बलदेव ६९२
तहाँ जुरे यादव सकल हरि यों बचन सुनाय॥
ब्रजबासिन कों कीजिये अब चलि ब्रजहि बिदाय ६९३
सुन्यो नन्द गोपन सहित हत्यो कंस दोउ भ्रात॥
साँचि न माने मन कछू प्रजा भाव डरपात ६९४
श्याम राम आये नहीं शोच करत मन माहिं॥
मोहन बलदाऊ बिना अब कैसें ब्रज जाहिं ६९५

नन्द जी की बिदा॥

नृप बसुदेव सहित तहाँ आ पहुँचे दोउ भाय॥

धाय मिलेउठिनन्दजू लीन्हें कराठ लगाय ६९६
उग्रसेन वसुदेव सों मिले हर्ष युत नन्द ॥
यादव गरा मिलि बैठहीं दोउ कुवँर ब्रजचन्द ६९७
देखैं ठाढ़े गोप सब नहीं श्याम वह भाव ॥
चलत वेग अब ब्रजन क्यों नंद मनहिं अकुलाव ६९८
तोरी हम सों प्रीति हरि सब हम मन दरशाय ॥
प्रीति विवश बोले न कछु रहे श्याम सकुचाय ६९९
पुनि श्री मुख बोले वचन यदुपति शोच विचार ॥
बहुते तुम हित चित कियो पालन पोष हमार ७००
मोसों कहत कि आन सों भभकि उठे नंदराय ॥
धारि सकत नहिं नयन जल गद्गवर हियो भराय ७०१
मधुर बचन हरि बोल यों सुनहु तात यह बात ॥
तुम नहिं निश्चय कीन्ह सो कियो गर्ग विख्यात ७०२
पुत्र हेत यति पाल करि कीन्हों विविध दुलार ॥
गये इते दिन बीत ब्रज हँसि हँसि खेल मँझार ७०३
हम कों जो तुम सुख दियो तुम सम माय न बाप ॥
जहाँ रहैं तुम्हरे सुवन मो बिनु ब्रजहि विलास ७०४
तातें जावहु बेगि ब्रज दीजै सब को धीर ॥
यशुमति सों करि बीनती कह्यो यही बलबीर ७०५
पुत्र हेत राहियो सदा उरते सुरति न टार ॥
मैं तुम ते नाहिं न कछूं जननी नेकु नियार ७०६

भये बिकल अति नन्द जू निठुर बचन सुनि श्याम
सखा गोप चकित रहे जोवत मुख सुख धाम ७०७
धाय नन्द चरणन परे यह मति कहो गोपाल ॥
तुम्हैं छाँड़ि जाऊं न ब्रज कहत रोय बेहाल ७०८
चलो बेगि ब्रज साँवरे क्यों करि रहे अबेर ॥
मग जोवत ह्वैहै तहाँ जननी करि अवसेर ७०९
सद माखन तुम हेत मथि ह्वैहै राखि गोपाल ॥
कहो सो तुम बिनु कौन को माता देहै लाल ७१०
हरि प्रताप जान्यो न हम द्वादश वर्ष बिताय ॥
अब प्रकटे वसुदेव सुत निठुर मधुपुरी आय ७११
क्यों हम हित मारे असुर दुख दारिद क्यों टारि ॥
डारि दियो किन गिरि जबै रबि मरते नर नारि ७१२
क्यों होती सो आज दिन तुम बिछुरन की पीर ॥
कहत नन्द यों बिकल अति बहत दृगन सो नीर ७१३
मन सिहाहिं यादव सकल देखि नन्द की प्रीति।
कहि न सकत कोउ कछु सकुचि प्रेम परतीति ७१४
मानो पन्नग के डसे व्याकुल सबहि गुवाल ॥
ठाढ़े काढ़े चित्र से निरखत सुख नँदलाल ७१५
हलधर समुझावन लगे क्यों दुख पावत तात ॥
कछुक काज करि फेरि ब्रज ऐहैं दोऊ भ्रात ७१६
कह्यो गर्ग तुम सों सबै कारण करि बिस्तार ॥

भूमि उतारन भार हरि प्रकट धरणि अवतार ७१७
हमरे मात पिता नहिं तुम बिनु औरै कोय ॥
जहाँ रहैं तुम्हरेहि सुवन कहि लावैंगे दोय ७१८
ह्वैहै जननी दुखित अति तुम जायें धरि धीर ॥
सुनि वाणी बलदेव की बोले नन्द अधीर ७१९
मारि कंस सुर काज करि सुख दीन्हों वसुदेव ॥
मिल आवहु अब फेरि ब्रज दोऊ हरि बलदेव ७२०
ऐसे कहि व्याकुल महा गहे नन्द हरि पाँय ॥
गदगद हियमुखक्षीणाद्युतिसोदुखकिमिकहिजाय
सखा वृन्द अरु नन्द जू अपर सकल उपनन्द ॥
अतिहि बिरह कातर निरखि बोले श्रीनँदनन्द ७२२
ब्रज मथुरा कह आँतरो तात काहि पछिताय ॥
कहा दूर तुम ते कहूं शोचो मन सकुभाय ७२३
देउ धीर ब्रज जनन को कह्यो बोध ब्रज नाथ ॥
जोरि हाथ तब नन्द ने धरि आयसु निज माथ ७२४
प्रभु चाह्यो सोई करो तासों नाहिं उबार ॥ ॥
जैहौं ब्रज तुम्हरे कहे वचन कौन विधि टार ७२५
नीच दशा ले ऊच करि तुम प्रभु दे प्रभु ताय ॥
मो गवाँर पशु पाल को जगत धन्य यश गाय ७२६
तुम प्रताप तिहुँ लोक में विदित सुकृत कीरवान ॥
सुर नर मुनि महिमा अमित साखी बेद पुरान ७२७

बहुरि श्याम चरनन परे ऐसे कहि नँदराय ॥
कह्यो जान सनमान करि लीन्हें कृषा उठाय ७२८
कहन लगे वसुदेव तब बहु विधि विनती भाखि ॥
आगे श्रीनँदराय के बहुत सम्पदा राखि ७२९
यहाँ वहाँ नहिं भेद कछु अपने हि करि के जान ॥
रामश्याम बालक दोउ सब को सुख की खान ७३०
सो सम्पति नँदराय जू करी न अंगीकार ॥ ॥
कर जोरें घनश्याम सों विनवत बारम्बार ॥ ७३१
कृपासिन्धु रहियो सदा ब्रज पर परम कृपाल ॥
कह्यो जान ब्रज सबन कूं बोधे नृपति दयाल ७३२
गोपसखा सब बोधि हरि सादर कीन्ह बिदाय ॥
चले सकल ब्रज शोच वश हरि वियोग दुखदाय ७३३

ब्रजबासिन को बिरह ॥

लटपट पग मग चलत ही रही देह सुधि थोर ॥
ब्रज तन जात विलोकहीं फिरि फिरि मधुपुरी ओर ७३४
भये बिरह बारिधि मगन रह्यो न काहू चेत ॥
ज्यों त्यों करि नियराय ब्रज उदासीन हरि हेत ७३५
गये सदन यादवन हित उत हरि जन हितकार ॥
ब्रजबासिन के नेह को करि बखान बिस्तार ७३६
रहे जो सेवा रहित हम कहत नन्द पछिताय ॥
कर्म मन्द बन अति कठिन पठय चरावन गाय ७३७

निकट बसत भूल्यो रह्यो चीन्हें नाहिं कृपाल।
इन्द्र कोप गिरि धारि कर सम हित गये पताल ७३८
अब नृप भय भयो लोभ वश पठै दिये दोउ भाय ॥
समुझि नंद करतूति निज मुर्छि धरणि सुरझाय ७३९
बल मोहन की सुरति करि जननी बाट निहार ॥
आतुर आई दौरि लखि आवत सबन विचार ७४०
धाईं कनिया लेन को बत्स हेत जिमि धेन ॥
ब्रज तिय धाई हर्ष अति आश दरश सुख देन ७४१
श्याम राम दोऊ कहाँ पूँछत यसुदा माय ॥
नन्द नीर नयनन बिकल रहि गये शीश नवाय ७४२
देखि नन्द गति बिकल अति ब्रजजन बिन ब्रजनाथ।
बदन गयो मुरझाय सब धुनत हाथ सों माथ ७४३
परे भूमि कहि टेर सब हरि बिसरयो केहि दोष ॥
करि बिलाप तहँ नन्द सों यसुमति कहति सरोष ७४४
ब्रज पग दीन्हों सुतन तजि धृग धृग पति कह कीन
सूझि परयो मग कौन बिधि फरयो न क्यों हियहीन ७४५
बिछुरत आनँद कन्द के क्यों राखे तन प्रान॥
सुनी नहीं कहुं मंद मति दशरथ कथा जो कान ७४६
में जा रहिहूं मधुपुरी ह्वैके हरि की धाय॥
यह ब्रज अपनो नन्द अब राखो ढोकि बजाय ७४७
ले गयो जीवन प्राण हरि वह वैरी अक्रूर ॥

गई न संग जो मैं यहाँ रही मूढ़ मति क्रूर ७४८
जो जाती हरि संग ही क्यों होतो यह काम ॥
श्यामराम कूं छाँड़ि ह्वाँ नहिं आवति ब्रजधाम ७४९
भये भयावन धाम ब्रज मानो बसे मशान ॥ ॥
पलटे गति जिमि देह की निकसि जाहिं जब प्रान ७५०
पूँछति यसुदा रुदन करि कहो नन्द समुझाय ॥
कह्यो श्याम मोहित कह्वा जब तुम कीन्ह बिदाय ७५१
तुम ह्वाँ चलती बेर पति बिनती कछू न कीन्ह ॥
अर्द्ध बचन सुनि ह्वै बिदा उठि ब्रज को चलि दीन्ह ७५२
जो चाहैं सोई करैं वे हरि त्रिभुवन राय ॥
मैं अपनो सो करि थक्यो कह्यो नन्द बिलखाय ७५३
पुनि मिलिहैं कछु काज करि कह्यो श्याम बलराम ॥
मोहिं पठयो तुव हेत लगि कहि कहि अधिक प्रणाम ७५४
तब मैं आयसु शिर धरी बचन सक्यो नहिं टार ॥
मिलन श्याम की आश पुनि यसुमति प्राण अधार ७५५
ब्रज में ग्वालन घरन घर सो सब वर्णन कीन्ह ॥
रजक आदि हति कंस नृप मात पिता सुख दीन्ह ७५६
कुबजा को रानी कियो दे सुहाग ब्रजराज ॥
प्रकट नाम यदुपति जगत देखि अहीरन लाज ७५७
गोपिन कुबजा नाम सुनि सौति डाह उर शाल ॥
ह्वै निराश कहि परस्पर मिटी आश नंदलाल ७५८

दासी को रानी कियो जाति पाँति नहिं चीन्ह ॥
ब्रज नहिं ऐहै साँवरो तजे न नारि नवीन ॥ ७५९
श्वफलकसुतजब आय ब्रज लगे श्याम के कान ॥
कुबजा मिस मधुपुरि गये लिये कंस के प्रान ७६०
कहन लगी इक सुनु सखी हरि वे दिन बिसराय ॥
घर घर माखन चोर हम हित सों गोद खिलाय ॥ ७६१
बड़े होन की आश हम देवनि द्वार निहोर ॥ ॥
बड़े होय यह सुख दियो गये कूबरी पौर ७६२
बालापन यशुमति सखी हारी लाड़ लड़ाय ॥
ताहि छाँड़ि अब देवकी पुत्र भये ब्रजराय ७६३
कागहेत पालन कियो पिक तजि कुल मन दीन्ह ॥
सो करशी घनश्याम ने महर महरि सों कीन्ह ७६४
नृप आसन बैठे मुदित बहिरावैं ब्रज नाम ॥
सुनियत सुरभी चित्र लखि लजियावत घनश्याम ७६५
चपैं हमारो नाम सुनि निठुर भये बलबीर ॥
कुब्ज केलि रस वश परे कहा हमारी पीर ७६६
नये मिले पितु मातु ह्वाँ नई कूबरी नारि ॥
नये सखा नव नेह अब क्यों ब्रज करैं सम्हारि ७६७
जाति पाँति हमरे नहीं हमें परेखो कौन ॥ ॥
तिन को दुख माने कहा भये पराये जौन ७६८
नन्दलाल अब श्याम कूं कहैं न गोपीनाथ ॥

वासुदेव विख्यात जग यदुबंशिन के साथ ७६९
अब नाहिन बनमाल उर मोर पक्ष नहिं शीश ॥
पहरि आभरण श्याम ने गुंज हार तजि दीश ७७०
सखखु भूलि दियो सखी यह बन की सब प्रीति ॥
रही न पिछली सुरति कछु यह राजन की रीति ७७१
मुरली ध्वनि भइ बावरी जब कीन्हे वे ढंग ॥
अब मन काक जहाज को छुटे कौन बिधि संग ७७२
लगी कहन इक सुनु सखी अब ब्रज धनी न कोय ॥
जब कृपाल गिरिधारि कर किये सुखी दुख खोय ७७३
कियो पान दावा अनल अतुल प्रताप दिखाय ॥
ब्रज जन हित सुन्दर सुखद राखे जरत बचाय ७७४
अब समुझत सकुचत सखी यह लागे हम दोष ॥
बिछुरत फट्यो न क्यों हियो भये प्राण किन मोष ७७५
सुन्दर मोहनलाल बिनु लगे जान दिन रात ॥
रहत प्राण हम गात जो अधम हमारे गात ७७६
बिन वह मूरति साँवरी देखे कछु न सुहाय ॥
जरत बिकल बिरहा अनल तपत चंद अधिकाय ७७७
होत भयावन रूप जिमि बिना प्राण की देह ॥
हरि बिनु तैसे देखियत डरपावन ब्रज गेह ॥ ७७८
ना जानों कब देखि हैं वह मूरति फिरि नैन ॥
ग्वाल बालकन संग मिलि भोजन करि सुख दैन ७७९

कहन लगी इक विवश हरि मो घर माखन चोर ॥
मैं दुर छबि निरखत नयन बलिहारी त्वराा तोर १८०
चले भाजि पकरी भुजा ले कनियाँ हिय लाय ॥
जैसे लगि छाती रहे सो सुख किमि कहि जाय १८१
मनमोहन के खेल को कहँ लगि करैं बखान ॥
भये पराये श्याम अब सुनि सुनि जिय अकुलान १८२
करि बिलाप बोली सखी कहे श्याम कोउ जाय ॥
बन माहीं बिडरी फिरत तुम बिन मोहन गाय १८३
आय सँभारें जानि निज लावें गैयन घेर ॥
मधुर मनोहर सुखसदन करि मुरली की टेर १८४
कहत एक यों मति कहो कहो बसो ब्रज फेर ॥
कहैं न तुम सों फेरि अब लाओ गैयन घेर १८५
नहीं जगावें प्रातही बन पठवन के हेत ॥ ॥
बर्जो न माखन चोर हरि यशुमति उरहन देत १८६
ऊखल बँधवावें न फिरि ऐगुरा प्रकट बखान ॥
दान देत नहिं झगरिहैं छाँड़ि दीन्ह हठि मान १८७
वेराती सुमन गुहाय अरु चरण महावर लाय ॥
सो नाहीं कबहूं कहैं देउ दरश पिय आय १८८
कहत कोऊ परि पायँ हरि ऐसे ले ले नाम ॥
धन्य भाग्य जो फिरि सखी ब्रज आवैं घनश्याम १८९
अब नहिं आवें ब्रज सखी बोलि उठी इक बाम ।

नृप पद तजि ह्याँ ग्वाल क्यों कहिलावैं गे श्याम ७६०
हय गज होत सवार ह्वां बाढ्यो अधिक प्रताप।
ह्यां ब्रज गाय चराय बन पावैं कौन कलाप ७६१
ह्वां पहिरत श्री अंग हरि नाना बसन अनूप ॥
यह्वां ओढ़ि क्यों कामरी होयँ ग्वाल के रूप ७६२
फेरि मिलन पिय कहि गये हँसि सुख चलती बेर॥
सो अब हम जानी परी कपट प्रीति करि हेर ७६३
उतही मग जोवत सखी नयनन मानी हार॥
भीजत उर की कंचुकी वर्षत अँसुवन धार ७६४
स्वपनेहिं देखैं श्याम को नींद परै जो नैन ॥
जैसो दिन तैसी निशा परे न पल भरि चैन ७६५
आज लखे मैं स्वप्न में बोलि उठी इक बाम ॥
मोहन मदन गोपाल जनु आये मेरे धाम ७६६
हँसि पकरी मेरी भुजा मोहन नवल किशोर ॥
भई नींद बैरिनि सखी रही न पल भरि ओर ७६७
जागि परी कोउ ढिंग नहीं भई दशा कठिनाय ॥
बिरह काम दोऊ अनल मारी अधिक जराय ७६८
वेई ऋतु वेइ मास हैं वेई दिन वेइ रैन ॥
बिन हरि मदन विलास सब पलट परे दुख दैन ७६६
भयो कन्दरा घर सखी शूली ह्वै गइ सेज ॥ ॥
शीतल शशि की किरण अब भई अनल को तेज ८००

मयल नीर घसि धरि हृदय सो अति पीर बढ़ाय ॥
अरुरा फूल बन ख्भियत नयनन आगिजराय ८०१
लगत तीर मानो हृदय बहत जो त्रिविध समीर ॥
जरत करेजो अवरासुनि बोलत कोकिल कीर ८०२
पिय बिनु लगत कटार सी परत बून्द जो अंग ॥
उठत दाह जिय अधिक सुनि चातक बोल उमंग ८०३
कहन लगी सखि एक यों चातक दोष न लाय।
अति सुकंठ पिय रटन रट बिरहिन होत सहाय ८०४
अबलन करत सहायता आप सुधा रस पान ॥
या पक्षी सम और जग कौन सुकृत की खान ८०५
जो आवे पर काजही सुफल जन्म जग सोय ॥
मगन बाल हरि बिरह रस ऐसे ही सब कोय ८०६
सोवत जागत दिवस निशि भूलत नाहिं गोपाल॥
पथिक जात मधुबन चले तिन्हें घेरि ब्रजबाल ८०७
कहैं पायँ तुम्हरे परें जात पिया के देश ॥
कहियो उत घनश्याम सों ब्रज उतपात सँदेश ८०८
सुरपति यज्ञ मिटाय तुम गिरिधर ब्रजहि बचाय ॥
बिरह रूप करि आय चढ़ि चाहत फेर बहाय ८०९
कारे घन दोऊ नयन लगी झरी दिन रैन ॥
लगे पनारे बहन युग कुचन बीच कित चैन ८१०
तीसरा झकझोरा पवन ऊर्द्ध श्वास बरबान ॥ ॥

गर्ज शब्द घनघोर की सोई पीर पिछान ८११
व्यथा प्रवाह बाढ़्यो अधिक डूबत हैं ब्रज नारि।
लीजै आय निकारि सब तुम्हरी बाट निहारि ८१२
कहि गये श्रीमुख मृदु बचन आय मिलैंगे फेर
अवधि बीत आये नहीं रहीं बैठ मग हेर ८१३
तुम बिनु तलफत प्राण प्रिय जैसे जल बिनु मीन।
ब्रज गति ऐसी जानिये भवन ज्यों दीपक हीन ८१४
राम दुहाई आन करि कहियो पथिक सुनाय ॥
सुन्दर मोहन लाल सों यह सब व्यथा जनाय ८१५
तुम बिनु नन्द नँदन पिया श्रीवृषभानु कुमारि ॥
बदन ज्योति जनु छिपि गई निज मुख आँचर डारि ८१६
फुल्लित कमल स्वरूप सम हुते प्रिया के नैन ॥
अब निठुरे रँग दीखियत है कुरूप के ऐन ८१७
बिरहानल की ताचना तन गति परम लखाय ॥
काचो कंचन पेखियत जैसे आँच लगाय ८१८
सुख सम्पति तुम बिनु कहाँ सो सब गयो हिराय ॥
कोकिल बाणी मुख नहीं कहत रैन दिन हाय ८१९
मान साध सरबसु गई प्यासी दरशन श्याम ॥
है उदास तन मलिन अति व्याकुल निशि दिन बाम ८२०
जब चातक पिक अलिकुलन अनखाती लखि नैन
अब पूछित कुशलात तिन करि स्नेह हित बैन ८२१

ललतादिक सब सखिन सों गर्ब करत ही जीय ॥
अब रोवत मिलि ह्वै बिकल लगि लगि तिन के हीय ८२२
ऐसे निज निज हेत सब श्याम सँदेशो देहिं ॥ ॥
होत साँझ तहँ पथिक कों चलत छोर गहि लेहिं ८२३
हरि बियोग पीड़ा हृदय बिरह बिकल ब्रजनारि ॥
बरनि व्यथा जेहिं तेहिं बिना दरशा धीर न हिं धारि ८२४
बोलत चातक रैन जब कहत कोउ अनखाय ॥
बिरह अनल इक जरत में जरती अधिक जराय ८२५
पिया हमारे घर नहीं तू कूँकत पिय नाम ॥
उपजति अति आरति हृदय सुनि सुनि बिरहिनि बाम
सुनि शारँग इक कहत यों हम सब तेरी दास ॥
वहाँ जाय टेरो अधिक हैं हरि मदन बिलास ८२७
पावस ऋतु आवन भयो ग्रीषम करत पयान ॥
बढ़्यो चाव चित तियन को मिलन पीय सुखदान ८२८
ले आवहु घनश्याम को चातक सुयश कमाय।
मानैंगे तेरो कह्यो तेरे हित ब्रज राय ८२९
कोऊ चातक बैन सुनि सखी कहत सुख बैन ॥
यह बिहंग मोहिं पीव तें प्यारो अति सुख दैन ८३०
बिरहानल कारो भयो पिय हित रटत पुकारि ॥
स्वाति लागि बरु सहि दुख त्यागि सिन्धु को बारि ८३१
याके हिय पिय पी रहे जानत पीर पराय ॥

लग्यो बान जेहि प्रेम को ब्यथा प्रेम समुझाय ८३२
कोउ कहत सुनु री श्रवण। कोकिल सखी सुजान।
रहत जहाँ हमरे पिया करियो तहाँ पयान ८३३
सुन्दर परम सयान तू मधुर वचन सुख देत॥
तो समान नहिं और जग उपकारी हितहेत ८३४
उपबन बैठि सुनाइयो यही श्याम को टेर॥
ब्रज अबला मनमथ प्रबल बल करि लीन्हों घेर ८३५
ले आवहु पिय फेरि ब्रज सुयश सुकृत की खान।
गावैं हम गोकुल सकल तुव कीरति को गान ८३६
मोरन बोलत बर्जरी ऐसे कहि इक नारि॥
रह्यो जात नहिं बोल सुनि बिनु श्री नन्दकुमार ८३७
मरे न ये ब्रज ते टरे सुनु सखि बैरी मोर॥
कुहुक करत बेहाल हम हैं बिदेश चित चोर ८३८
कृष्ण ध्यान लवलीन यों बिरह मगन ब्रजनारि॥
प्रेम रूप ब्रज नागरी नाहिन इक सखान्यारि ८३९
कृष्ण रूप छबि मन हरण बसी जो जिन के नैन॥
कृष्ण कृष्ण अनुदिन सदा रटि रसना सुख बैन ८४०
हरि के गुण गुणि गायत सकल मन पावत आनन्द॥
हिय हुलास श्रवणन सुख सुनियत यश ब्रजचन्द ८४१
पलभर नहिं बिसरत हृदय मूरति श्याम बसाय॥
घर बाहिर बैठत उठत चलत फिरत गुण गाय ८४२

सोवत जागत रैन दिन गुप्त प्रकट यहि नेम ॥
नहिंसुहातकछुऔरविनप्रीतिरीतिहरिप्रेम ८४३
ब्रज बनिता भई कृष्णा मय कृष्णा प्रेमरस पाग ॥
विदितहोयतिहुँलोकमेंसुन्दरसुयश सुभाग ८४४
धन्य प्रीति वहि गाइये कृष्णा प्रीति जो होय ॥
सुरति धन्यसोइकृष्णारतिरहीजोसुरतिसमोय ८४५
जो हरि संग बिहार सुख ताहि धन्य करिगाय ॥
धनिवहदुखजोकृष्णाकेबिरहरहतमनलाय ८४६
जामें हित घनश्याम सोंधनिजपतपधनिज्ञान ॥
हरि दासन कोजन्मजगधनिधनिहोतबखान ८४७
जे आश्रित इक कृष्णा के सब विधिधनिवेहोंहिं
प्रेमप्रीतिरसश्याम बिनुऔरननयननजोहिं ८४८
निशिवासरहरिध्यानहीं गोपिन यशुमतिनन्द॥
रहेप्राणलगिआशादृढ़मिलनश्याम ब्रजचन्द ८४९
बिसरे सब ब्योहार उन और न प्राण अधार ॥
सुरति नन्द नन्दन सुखद स्कन्ध लकुटि निरधार ८५०

यज्ञोपवीत॥

हरिजबते मधुपुरि बसे होत तहाँ नित मोद ॥
निरखिसुवन श्रीदेवकीमगनमनोरथगोद ८५१
सुदित पिता यादव सकल पुरवासी नर नारि ॥
एक दिवस वसुदेवजू कीन्हों यही बिचारि ८५२

राम कृष्ण ब्रज में रहैं मिलि ग्वालन के माहिं।
यदुबंशिनकुलधर्म कीरीतिजोजानतनाहिं ८५३
तातें इनको दीजिये यज्ञोपवीत कराय ॥ ॥
पूँछिसुदिन शुभ लग्न धरि गर्गाचार्य्यबुलाय ८५४
यज्ञकाज तहँ साज सब कीन्हे विविध विधान॥
सकलतीरथन आनिजलरामकृष्ण अस्नान ८५५
करि अभिषेक पुनीत हरि वेद मंत्र पढ़ि रीति॥
रामश्याम को गर्गमुनि दीन्हों यज्ञुपवीत ८५६
वेद शास्त्र कहि नेति सुख पावत अन्त न शेश॥
दियो ताहि श्रीगर्गमुनि गायत्री उपदेश ८५७
पूजन करि वसुदेव जू दियो द्विजन कों दान॥
बन्दीजन बहु द्रव्य मिलि नारिन मंगलगान ८५८
लखि कौतुक सुरगण मुदित सुमन वर्ष झरिलाय।
परमउछाह अनन्त अति तात मातु उरछाय ८५९
विद्या पढ़न गये दोउ सकल गुणन की खान॥
गुरुसेवा हित चित दियो लखि प्रभाव सुखमान ८६०
पढ़ लीन्ही विद्या सकल अल्प काल दोउ भ्रात॥
जानि जगतगुरु जगतपति सांदीपन हर्षात ८६१
आनि दिये गुरु के सुवन यादव पति जगदीश॥
भये सुखी द्विज तिय सहित हरषित दई असीश ८६२
गुरु आयसु सुनि मधुपुरी आये दोऊ भाय॥

हमरे बिनु ब्रजजननको सरा सुगसमहि बिहाय ॥
करो गमन ब्रज बेगही श्री हरि श्री सुखगाय ८८४
करियो बिलम न लाय ह्वां ऊधो ब्रज में बास ॥
श्याम चतुरई करत हम तुम बिनु यहां उदास ८८५
जल बिनु मीन जियत सखा करियो सोइ बिचार ॥
अति प्रवीण सिखऊँ कहा तुमकूं बारम्बार ८८६
ऊधो बोले मान करि ज्ञान गर्ब्ब उर माहिं ॥
तुम आयसु जगदीश कूं कैसे कहूं कि नाहिं ८८७
ऊधो अबहीं जाउ यह हँसि बोले घनश्याम ॥
करहु बोध दै ज्ञान जो एक पन्थ द्वै काम ८८८
पहिले कीजो मित्र तुम यशुमति नन्द प्रतोष ॥
सकुच रहित पुनि तियन कूं ज्ञान कथा करि पोष ८८९
वे हैं महा प्रवीण अति तुरत समुझिहैं ज्ञान ॥
जल पाये ज्यों मीन सब शीतल ह्वै है प्राण ८९०
करि महंत यहि काज हित ब्रजहि पठावत श्याम ॥
ऊधो ब्रजजन दरश लहि होहिं सन्त अभिराम ८९१
दई जो ऊधो हाथ ही लिखि पाती यदुराय ॥
और सुखागर मृदु वचन कीन्ही विनय सुनाय ८९२
रहियो कुशलानन्द तुम अहो यशोमति मात ॥
कछु दिन में तहं आय हैं बल मोहन दोउ भ्रात ८९३
जबते बिछुर्‌यो मात सों कीजे कहा बखान ॥

नहींकहत ता दिवसतेमोहिंकोऊसुखकान्ह ८९४
कह्योसँदेशनजात सो तुम पाले दुख पाय ॥
अबसुत करिमोहिं देवकी नितनवहेतजनाय ८९५
नन्द बबा एतो निठुर मन काहे करि लीन्ह ॥
करीनसोधसँभारिइनि घालिमधुपुरीदीन्ह ८९६
नरनारिनब्रजजनसकलबच्छगायबन चार ॥
यथायोगसमुझाय तिनकहियोकुशलहमार ८९७
प्रकट श्याम ब्रज प्रीति यों कहि ऊधो सों बैन ।
तिन्हें कारन विप्रीति सों चले ज्ञान लै सैन ८९८
श्रीहलधर आये तहाँ लखि ऊधो ब्रजजात ॥
भरेनयनदोउप्रेमजल समुझत ब्रजकीबात ८९९
श्रीवसुदेव रु देवकी तिनहुंसुन्योयहबात ॥
हरिआयसु अनुसारब्रजऊधोकरतपयान ९००
लिखिपातीवसुदेवजूगुरा हित यशुमतिनन्द ॥
हमैंउचितसेवाजो तुम पालेसुत जगबन्द ९०१
ये दोउ तुम्हरे हि पुत्र हैं हम कहिबे को नाम ॥
करैं भजन तुम्हरो सदा श्री मोहन बलराम ९०२
करि बिचार ऊधो चले यहै गर्ब्ब उर धारि ॥
ज्ञानकथाकहसमुझिहै ग्वालिनिब्रजकीनारि ९०३
ब्रज लोगन चलिदेखिहूं जिन्हैं मान यदुराय ॥
गमनउपगसुतहर्षतन गोपिनमनदरशाय ९०४

लागत श्रवरान भँवर इकधुनिधुनि करिगुंजारि ॥
श्याम मिलन शुभ सगुन धुनि कागउडावतनारि ९०५
उड़ मनभावन कागतूजोगोकुल हरि श्राय ॥ ॥
दधि माखन तुवसुखभरैं अंचर पाग बँधाय ९०६
बन्ध कंचुकी टूट हिल अंचल बिनहि बयार ॥
बायस उड़ बैठत कहैं उमगत हर्ष अपार ९०७
आवैं गोकुल साँवरे कहत परस्पर बैन ॥
लावै सुधि कोउ श्याम की फरकत भुज अरु नैन ९०८
ब्रज तिय अति बड़भागिनी घरघर सगुन विचार
दरश आश अनुराग मन मोहन नन्दकुमार ९०९
मथुरा तनटक लाय सब अनुदिन पन्थ निहारि ॥
कब आवैं ब्रजनाथ ब्रज अभिलाषत ब्रजनारि ९१०

श्रीगोकुल में ऊधोजी को आगमन ॥

मधुपुरि तजि गोकुल निकट ऊधो पहुँचे आय ॥
रथ बैठे तद्रूप हरि शोभा परत लखाय ९११
भरी परम अनुराग तिय रथ तन लाये नैन ॥
भये दूर दुख स्वप्न सुख लूटत जैसे रैन ९१२
आवत नन्दकुमार ब्रज पर्यो जो घर घर शोर ॥
तरुण वृद्ध अरु बाल सब निकसे देखन दोर ९१३
मुदित यशोदा नन्दहू चले लेन अगुवाय ॥
तेहि क्षण ब्रज के लोग सब आनँद उर न समाय ९१४

गईं बदन मुरझाय तिय रथ देखे नहिं श्याम॥
सुनत बिकलयशुमतिपरीआईंजुरिब्रजबाम९१५
सखा पठायो श्याम ने भली भई यह बात॥
कहतिमहरिसोंबामसबउठीबूझिकुशलात९१६
सुफल घरी है आज की करहु हर्ष मन जान॥
लिखि पठयो ह्वैहे कभूं आवन कूं ब्रज कान्ह९१७
रथ ते हर्षि उतारि ले गये नन्द निज पौर॥
अर्घ देत भीतर लियो आदर कियो न थोर९१८
कह ऊधो बलबीर सुधि कबहूं करत हमारि॥
पूंछ नन्द कुशलाय तन गद गद बचन उचारि९१९
चूकि समय पछिताइये सरे काज कह आज॥
हम अहीर जाने नहीं घर आये महराज ९२०
ऊधो हम जाने नहीं कहि यशुमति भरि नैन॥
हित मान्यो हम पुत्र करि बासुदेव सुख दैन ९२१
दुहत और के बाल लखि खरिक माहिं नित प्रात॥
करत शूल सुधि श्याम की अधिक करेजे घात ९२२
को गैया ले जाय अब जोरि सखन के संग॥
बन ते गाय चराय को आवै साँझ उमंग९२३
काहि लेउँ हिय लाय मुख कमल मनोहर चूमि॥
आँचर रजत झारि कै बलिहारिन की लूमि ९२४
ऊधो साँचि बखानिये बिलखि कहत यों नन्द॥

फिरहू ब्रज ऐहैं किधौं मनमोहन ब्रजचन्द ९२५
कहि जो गये बलबीर जू ऊधो चलती बेर ॥
तात न होउ अधीर हम फिरि मिलिहैं हित हेर ९२६
कबहुं आय प्रतिपाल सो करिहैं वचन कृपाल ॥
कहु ऊधो तुम सों कहा भाख्यो दीन दयाल ९२७
भये सकल कृश गात ज्यों श्याम बिरह नर नारि ॥
युग सम हम को रैन दिन बिनु हरि कठिन अपारि ९२८
समुझावैं ब्रज लोग सब तऊ बोध हम नाहिं ॥
माखन हरि सुख योग लखि उठत शूल जिय माहिं ९२९
रोटी अरु नवनीत ज्यों बिन मांगे उठि प्रात ॥
को दैहै करि प्रीति बिन बानि जानि मों तात ९३०
ऊधो के पायन परी कहि यशुमति बिलखाय ॥
धनि यशुमति नंदराय कहि ऊधो करत बड़ाय ९३१
प्राण पियारे श्याम जो धन्य तुम्हारो भाग ॥
परब्रह्म घट घट प्रकट जिन सों अति अनुराग ९३२
सुत करि तिन्हैं न जानिये वे कर्त्ता संसार ॥
नहीं तात कोउ मात हरि भक्तन हित अवतार ९३३
हम हैं सब अज्ञान जो हरि महिमा नहिं जान ॥
जन्म कर्म करि रहित हैं पुरुषोत्तम भगवान ९३४
सिखवत जो ऊधो हमें हम हूं मन समुझाय ॥
रह्यो परत नहिं देख बिन वह मृदु रूप कन्हाय ९३५

फिरत दुखारी गाय सों जिन्हैं चरायो श्याम ॥
सूँघत हरि खोजें सकल गोदोहन के धाम ९३६
सब ब्रज बिरह अधीर हम युग सम पलहिं बिहाय
धरैं कौन विधि धीर बिन मनमोहन ब्रजराय ९३७
नन्द भवन भइ भीर अति कुशल पूँछि नरनारि।
ऊधो शिथिल शरीर लखि ब्रजगति प्रेम अपारि९३८
ब्रजजन सब अकुलात लखि ऊधो दशा बिहाल ॥
कहैं कहो कुशलात किन श्री हलधर गोपाल ९३९
इक क्षण युग सम जात है सुने प्रीति बिनु श्याम॥
आवन कह्यो कि नाहिं हरि कृपासिंधु ब्रजधाम९४०
सदा कुशल दोउ बीर हैं ऊधो कहि धरि धीर ॥
दियो पत्र यह लिखि कह्यो सुनु सँदेश बलबीर९४१
गोपसखा मति जान मोहिं ध्यावो योग समाधि।
घट घट मेरो वास है अविगति अगम अगाधि९४२
गावत वेद पुराण बिन निर्गुण ज्ञान नहिं मुक्ति॥
सगुण छाड़ि निर्गुण भजो करो ध्यान दृढ युक्ति९४३
मिलो ब्रह्म सुख जाय सब मिटैं दुखद त्रय ताप ॥
गोपीजन बिलखानि सुनि ऊधो बचन कलाप९४४
भई कठिन उर पीर अति मिटी मिलन की आश।
डूब गईं बिन नीर ही बिरहा व्यथा उदास ९४५
जहँ तहँ करत बखान सब बिकल परस्पर बैन ॥

ह्वै गये कछु अब दूर बसि औरहि हरि गुरा सैन ९४६
जानि परत नहिं कर्मगति यह निज कस मन दोय ॥
लिखि पठ्यो अब ज्ञान पिय प्रेम सुधा रस पोष ९४७
एक पहले ही देह हम अरु रस विरह की आगि ॥
कोइला ह्वै ते खेह करि अब ऊधो मन लागि ९४८
कृष्णा इष्ट हिय बास है लगे न यह हित चित्त ॥
श्याम दरश की आश कलि परत न ऊधो नित्त ९४९
अवधि आश की थाह हम रहैं जो ऐसेहि चैन ॥
अगुरा अथाह परैं बहुरि लखो न ढूँढैं नैन ९५०
युवतिन लाये योग तुम जैसे योगिन भोग ॥
हम तन भयो वियोग अति सुनिये बचन कुयोग ९५१
कहत हो तजिये भोग कूं जप तप नेम अचार ॥
सो बिधि बन ब्यौहार क्यों करैं सुहागिन नारि ९५२
नन्द नँदन पद प्रीति जो हमें योग अरु नेम ॥
ऊधो तुम्हें न दोष कछु बिवश कूबरी प्रेम ९५३
ऊधो अति लज्जित भये सुनिये युवतिन बैन ॥
मौन धारि सकुचित महा करत न ऊँचे नैन ९५४
मन लागे पछितान यों तियन सुनायो योग ॥
रहि गये शीश नवाय सुनि बचन प्रेम रस भोग ९५५
मन माहीं जान्यो तबै ये गुरा श्याम सुजान ॥
मोहिं पठयो ब्रजधाम जो सो कारण जिय आन ९५६

श्रीऊधो जी को बरसाने कूं गमन॥

ऊधो सुनिये बैन तिन्ह प्रथमहि गुरु मन मान॥
दरशन करि भरि नैन पुनि करि प्रणाम हर्षान ९५७
हरि आयसु अनुसार ही बरसाने को गौन ॥
मन मन करत विचार अब देखों ह्वाँ गति कौन ९५८
सुनी हुती यह बात सब मधुवन ते कोउ आय ॥
सुनि सँदेश यूथन चली अति आतुर उठि धाय ९५९
ऊधो मिले जो पन्थ मधि लखि रथ कियो अदेश ॥
पुनि आयो अक्रूर यह समुझि शोच जिय शेश ९६०
कौन काज अब चित धस्यो ले गयो प्रथमहि प्रान॥
लह्यो दरश ऊधो जबै तियन धीर जिय आन ९६१
भई सुखारि नारि सब लखि ऊधो को रूप ॥
सखा समीपी पीय को सुन्दर श्याम स्वरूप ९६२
ऊधो रथ ते उतरे बैठे तरु की छाहिं॥ ॥
ब्रज जन चहुँ दिशि भीर अति आनन्दित मन माहिं
अति प्रिय पाहुन जानि मन सुधि लाये ब्रजराज॥
पूजे प्रेम सहित सभन सनमाने हित साज ९६४
ब्रज बनिता निज हाथ सों लै लै पाती श्याम॥
धरि धरि नयन सिहाहिं कोउ हिय लगाय विश्राम९६५
मिलि मिलि सुख पायो सबन हित करि पाती पीय॥
बाँचि सुनाओ म्रदु वचन पुनि ऊधो कर दीय ९६६

ऊधो बाँचत पत्रिका देत बोध ब्रज नारि ॥
करि सबोध लागे कहन कथा ज्ञान विस्तार ९६७
रह गई शीश नवाय सब सुने वचन जो कान ॥
माँगत रस अमृत मनो गरल पिवायो आन ९६८
रहीं ठगीसी नारि सब दारुण सुनत सँदेश ॥
पुनि सँभारि बोली बचन हाथ जोरि आदेश ९६९
धनि ऊधो कुशलात हरि भली सुनाई आय ॥
श्याम मिलन की आश सो दीन्हो ताहि मिटाय ९७०
अधर अरुण मुरली धरें लाल कमल दल नैन ॥
सुनु ऊधो वह रूप हम नहिं बिसरत दिन रैन ९७१
सजल मेघ तन श्याम छबि रूप राशि आनन्द ॥
कौन ब्रह्म जानी न हम मोहीं श्री नँद नन्द ९७२
ऊधो सुनिये कान करि हमें उपासन कान्ह ॥
हाँसी करि हम जानही नाम ब्रह्म सुनि ज्ञान ९७३
हाथ पाँव मुख हीन है रूप रेख नहिं चीन्ह ॥
जायो यशुमति कौन को पौढ़ि पलन सुख लीन्ह ९७४
कहन तोतरी बात को सिखयो गोद खिलाय
नहिं सूझत ऊधो तिन्हैं दिये न हरि दृग ताय ९७५
नटवर वेष गोपाल मन मोहन रूप अगाध ॥
सो तजि क्यों खोजत फिरैं साधन शून्य समाधि ९७६
धरो सँभारि सयान तुम हित करि अपनो योग ॥

भक्ति बिरोधी ज्ञान हम सुने न बाढ़े रोग ९७७
भँवर एक तेहि समय तहाँ आयो करि गुंजार।
ऊधोप्रति तासों कहैं व्यंग वचन ब्रजनारि ९७८
निज निज मन की उक्ति करि कहत घात के बैन।
अलि प्रति ढोर सुनावहीं देखत ऊधो नैन ९७९
ऊधो भूले ज्ञान सब उत्तर बोल न आय ॥
सुनि सुनि गोपिन के वचन मौन भये सुख पाय ९८०
बोलि कह्यो इक ग्वालिनी सुनहु सखी सब एह।
कहत मधुप बस खोह बन बास छुडावत गेह ९८१
ऊधो इन को नाम है उन्हें नाम अक्रूर ॥
घात गाँस जानत सकल दोऊ गुण भरि पूर ९८२
इनही मिलकरि घात गुण कंसराय मरवाय ॥
कृपा करी ब्रज पग दियो अबलन योग सिखाय ९८३
दोऊ इक मति जानिये बोलि उठी इक नारि॥
बचन फाँसि वह प्रथम ही लेगयो प्राण पियारि ९८४
दया धर्म्म तिन के नहीं कीन्हों ब्रज सुख हीन॥
ज्ञानवान ऊधो अबै ब्रज बनिता हत कीन ९८५
देखो दियो पजार इन योग अनल चहुँ ओर॥
भई कठिन बचिये कहाँ रह्यो न भाजन ठौर ९८६
मधुप साँप की केंचुली जिमि हरि की हित रीति।
तज्यो श्याम हम सबन को करी न पाछे प्रीति ९८७

करहु राज राजें तहाँ ईजत यहै अशीश ॥
न्हातहु खसो न बारतन मनमोहन गोपीश ९८८
बहु रंगिन सुख संग है जितहिं जाहिं तित लेहिं ॥
चातक मीन पतंग गति इक रंगी दुख देहिं ९८९
कागी और मराल को बन्यो नीक अब साथ ॥
सुन्दर जोरी सोहनी दासी पति ब्रज नाथ ९९०
बारह मासी फाग अब दोउ खेलें तजि लाज ॥
हाँसी अरु अनुराग है लोंड़ी डोंड़ी बाज ॥ ९९१
दासी बश भये आप हरि हम को योग सिखाय
चतुर चकोरत आगजो अचरज कह्यो नजाय ९९२
वा चेरी के काज अब गावत जग यह गीति।
चेरीपति ब्रजराज हैं यह अचरज की रीति ९९३
ऊधो कहियो जाय तुम तजें कूबरी सौत ॥
सौति कहावत कूबरी यह सुनि दुख जिय होत ९९४
सिद्धि कहा ता कूब में लिख्यो सो नाहिं गोपाल
हमहूं कूब बनाय चलि दिखरावें वहि चाल ९९५
हरि हमसों पहिचान करि जैसे गज के दाँत ॥
काज करन के औरही दिखरावन इक भाँति ९९६
मन माने की बात है ऊधो कही न जाय ॥
मधुर कुहारा दाख तजि विषभखी विषखाय ९९७
काटी कठिन राति अब व्याकुल व्यथा अपार ॥

अंचर चीर चुचात नित पोंछित अँसुवन धार ९९८
कहैं कहाँ लौं निज कथा करि हरि निठुर बखान ॥
अबलन कारन सहाय अलि तुमहू योग सिखान ९९९
कठिन बिरह की पीर है जेहिं व्यापे सोइ जान ॥
क्यों धरिये मन धीर अलि सुन तुम बचन भयान १०००
गूँथे मोहन हाथ निज केश फुलेल रमाय ॥ ॥
जटा बनावन अब कह्यो तिन कूं भस्म लगाय १००१
सुन्दर सरस सुहाय हम जा तन पहिरे चीर ॥
ताहि कहत भगुवे बसन मति दीन्ही बलबीर १००२
जानी तिन की घात हम हरि अति कठिन कठोर
कहत कठिन तुमहू मधुप अनुचित तुम्हरी ओर १००३
तब मृदु वेणु बजाय हम बोल पठाई रात ॥
कियो रास रस चैन अब कटुक सुनावैं बात १००४
खग जिमि हम बश कीन्ह सब मृदु सुसकनि कन श्याम
योग छुरी लै गर दई भलो कियो यह काम १००५
कपट प्रीति विस्तार हरि करी जो ऐसी रीत ॥
रस की ऊख उखारि ब्रज बोय बेलि बिष तीत १००६
कहिये कहा बखान तिन्ह जिन ऐसी मति कीन्ह।
कथा प्यारा प्यारे हमें हरि मायें नहिं दीन्ह १००७
बोली सुनये वे नहीं तेहि छरा अरु इक नारि ॥
कहत कहा भरि नयन जल अलि सों बारम्बार १००८

वे माधव ये मधुप हैं भेद न काहू भाँति ॥
पढ़े एक विद्या दोउ बैठे एकहि पाँति १००९
पल माहीं भजि जात हैं इन के दया न धर्म्म॥
प्रथम जासु रस खात पुनि करैं न वाकी सर्म १०१०
कारे सब इक सार हैं कहत एकयों बैन ॥
कपटिन की चटसार सो देखि लेउ निज नैन १०११
अहि कारे कारे जलद करिये मन अनुमान ॥
कपट काग कोयल भ्रमर कविजन गायो गान १०१२
इन गुरा की सब ऊपमा कवि जन कियो बखान
श्याम अलक अलिकुल भलक बारी कोकिलगान
तन की शोभा जलद छबि भुजहि भुजंग समान॥
कान्ह कपट की खान है करियो री सबकान १०१४
गये भुजंग लौं भागि हरि म्रदु मुसकनि बिषडार।
कोकिलसुत करतूति करि यसुमति नंद बिसार १०१५
जैसे अलि रस सुमन ले गये प्रीति को तोर॥
हम चात्रिक जिमि रटन रटि वे घन भये कठोर १०१६
हम नहिं निपट अजान हे ऊधो सुनिये कान।
लिये राग हम जानि सो तुम जो बजाई तान १०१७
देउ जाय तिनकूं उलट तुम ले आये जौन ॥
योग निबाहनहार ह्यां ब्रज में एसो कौन १०१८
रोगिन भोग अरु बधिर मत अन्ध आरसी जोय।

हमें सिखावें योग सो यहै न्याव तिन होय १०१९
हमें योग जो योग है सोई योग मिलाय ॥
कहै न जाने रोग जो सो नहिं वैद्य कहाय १०२०
मुरली ध्वनि बोली बिपिन रस बिलास ब्रजराज ॥
मथुरा बसि ज्ञानी भये पण्डित जी महराज १०२१
मन हीं की मन में रही सो कछु कह्यो न जाय ॥
जितते चहीं गुहार हम धारी तिन तें आय १०२२
जानत हैं सब कोय हरि जैसी हम सँग कीन्ह ॥
कियो पाय हैं आपनो हम तो सब सहि लीन्ह १०२३
श्याम यही जो चित धरी ऊधो कियो बखान ॥
ब्रजबनिता तजि भोग कूं योग साध करि ध्यान १०२४
करैं कृपा आवें यहाँ प्रकट सुनावें ज्ञान ॥
मानि निकट उपदेश हम साधे योग विधान १०२५
राख्यो कछु न दुराय तब खेले रस लपटाय ॥
मिल्यो कहां अब योग यह ऊधो कहियो जाय १०२६
निज स्वारथ वह सगुरा है निर्गुरा हमें सिखाय ॥
लिखि पठयो निर्बोरा सो चाटें सहत लगाय १०२७
ऊधो तुम आंधर भये लखे न दिन औ रात
ठकुरसुहाती कहत हो मुख सों सब ही बात १०२८
सुनत कौन तुम्हरे बचन बकबादित श्रम सोय ॥
ह्यां ते उठि किन जात हो बन कारो जो होय १०२९

परमारथ अरु बिरह बिच करत न मूढ़ पिछान ॥
राजरोग कफ ग्रसितकों कहत रही कोखान १०३०
ऊधो करो विचार मन बोलि कह्यो इक नारि ॥
प्रथम देख ब्रजगति नयन करो योग बिस्तारि १०३१
नहीं रूप नहिं रेख है अरु बसु वरण बखान ॥
प्रेम प्रीति कैसे करैं तासों हम मन मान १०३२
बिन चैतन चतुराय अरु नहीं तरँग बिन तोय ॥
लख्यो न अबलौं ब्रज कोउ मधुप बतावत सोय १०३३
कहो लाख कोउ बिबिध हम बिन मोहन न सुहाय ॥
चन्दन लखि कहौ कौन विधि अन्न क्षुधा रति जाय १०३४
सखी बकत बेकाज कत बोल उठी इक बाम ॥
जिन्हें न लाज बिबेक तिन्ह कहिबो अनुचित काम १०३५
चौपद सखुभत हैं सखी षट् पद कह्यो न मान।
छाछ दूध तिन एकसो कहै सो करियन कान १०३६
जारी एक अनंग हम बिरहिनि बिरहजो आँच।
अबसुख पावें फेरि जब मनमोहन सँग नाँच १०३७
हम कूं दृढ़ ब्रत श्याम सों कहो बुरो संसार ॥ ॥
नहीं चाह कोउ मुक्ति की हमैं कथा सुखसार १०३८
दियो दरश ब्रज आय जो ऊधो हमरे हेत ॥ ॥
मेटो दुख हित करि वही जो हम को दुख देत १०३९
आवें सुन्दर श्याम ब्रज कीजे यतन कृपाल ॥

निरखि पीय की सुखद छबि सुख पावैं ब्रजबाल १०४०
साँचो योग उपाय है साँचो ज्ञान रु ध्यान।
हमैं साँच नँदलाल ही गर्ग बचन परिमान १०४१
हम अलि चेरी श्याम की बिबश होय मृदु हास ॥
सो छबि लखि जीवैं जियन नख शिख अंग बिलास १०४२
मधुप प्रीति रस जानि पुनि क्यों अजान हम हेत॥
भ्रमत फिरत बहु सुमन क्यों कमल बँधाय अचेत १०४३
करैं आन सों प्रीति हम तजैं यशोमति लाल ॥
कोटि कहौ कोऊ मधुप परैं न या जंजाल १०४४
कहियत रूप विराट के सूर चन्द दोउ नैन ॥
करत चकोरन भानु हित निरखि चन्द उर चैन १०४५
सगुण रूप नँदलाल के भये जो लोचन दीन ॥
जल बिनु सुख पावैं नहीं डारो दूध जो मीन १०४६
हमरे मन अलि एक है एक हि मूरति श्याम ॥
अटक ताहि छाँडत न क्षण निरखत आठों याम १०४७
लेती निर्गुण सँभार हम जो होते मन दोय ॥
सगुण श्याम शिर मोर सो कैसे डारैं खोय १०४८
जिन के मन दश बीस अलि दीजै उन को योग ॥
ऊधो निर्गुण लाय ब्रज क्यों डारत हो रोग १०४९
मोहीं गुण घनश्याम के निर्गुण कौन निबाह ॥
एक जन्म के कारणे तजें न हम तो वाहि १०५०

ऊधो बसें गोपाल नित हमरे अम्बुज हीय ॥
नहिं निकसत रसनेह रलि भये भँवर भोगीय १०५१
योग कथा अब जिन कहो ऊधो धरिये मौन ॥
भजे आन घनश्याम तजि जर बर जननी जौन १०५२
काहन देउ संसार को हमैं भाव यह एक ॥
नन्द नँदन की प्रीति दृढ़ जाओ और अनेक १०५३
प्रेम खोय जे प्राण तन रहें कौन ही काज ॥
बिना प्रेम शोभा कहां बिन निशि शशि हिन साज १०५४
बुरो न कोऊ मानियो बोलि कह्यो इक नार ॥
निरसन कहा पिछान रस रासिक हि जानन हार १०५५
कमलन ढिंग बीत्यो जनम दादुर रस न पिछान ॥
अनुरागी अलि विवश रस परे कमल बन्धान १०५६
जाने कहा मिठास रस गूंगो बात सवाद ॥ ॥
कब यो इन सों प्रेम रस घास काटिबो बाद १०५७
कहियो ऊधो कौन सों दहन कठिन निज हीय ॥
पसु वेदन कछु कहि न सुख रहत सहत ही जीय १०५८
यतन रहत ही जानिये कठिन लगन की पीर ॥
यंत्र मंत्र पहुँचे न यकि बैद्यन खैंच लकीर १०५९
हम निज मन हीं कठोर करि बहु भाँतिन समुझाय ॥
तदपि न क्योंहू भूलई मूरति कुँवर कन्हाई १०६०
पलग लगन नहिं सहन जब अब प्रानान क्यों चैन ॥

लागे वर्ष बिहान जो बिछु देखे सुख दैन १०६१
अति ही कठिन कठोर हैं ऊधो हमरे हीय।
निलज फटैं जव ही न क्यों बिछुरन लागे पीय १०६२
साँची नेम निबाह जिन हम सों भली जो मीन।
हम काँची रस प्रेम की श्याम विरह दुख लीन १०६३
ऊधो तुम सों चूक निज कहँ लगि करैं बखान ॥
हम ब्रजबासिन को मनो चूक दाहिने जान १०६४
ऊधो कहियो जाय यह मन मोहन सों बैन ॥
आय देखि हैं ब्रज दशा एक बार निज नैन १०६५
ऊधो तुम निश्चय कियो हम तन कह्यो बखान॥
सर्बमयी सब ठौर हरि पूरण ब्रह्म पिछान १०६६
तौ ऊधो आवागमन करत कौन के पास॥
यहाँ वहाँ कहो कौन को नियर दूर किन बास१०६७
नहिं पावत योगी रहे योग समुद्रहि बूड़ ॥
बँधे यशोमति प्रेम वश सो ब्रज में सुन मूढ़ १०६८
हरि छबि अटके नयन हम जागत सोवत रैन ॥
बाल चरित्र किशोर गुण अमिय सिन्धु सुख शैन१०६९
रटि मरि हैं प्रिय नाम ही सुमिरि सो इ गुण ग्राम ॥
अनल ताप तन प्रथम घट भरि रस आठों याम१०७०
रवि रथ बेधत जाय जब सन्मुख सरस हि शूर॥ ॥
पुनि फल फरत अघाय महि प्रथम बीज अंकूर१०७१

कथा प्रेम मारग गह्यो सुख दुख कौन डराहिं ॥
बिना नीर कछु और हित ऊधो मीन न नाहिं १०७२
ऊधो हम सब करि चुकीं कह्यो सखी इक बोल
धर्यो ध्यान मूँदे नयन हठ मन डाँवाडोल १०७३
जिन पठये तुम सिख यहाँ उलटि देउ तिन जाय ॥
दीख परत तुम शिर पर्यो करैं न हित ब्रजराय १०७४
तुम सों कियो बखान अलि योगिन योग भुलाय ॥
गयो न जान्यो पचि मरे ब्रह्म रन्ध्र निकसाय १०७५
हम उर जाको ध्यान दृढ़ हम देखें वहि ज्योत ॥
हरि सों हीरा छाँड़ि अलि क्यों हित करिये पोत १०७६
कहत कौन की बात तुम हम तजि गयो सो कौन ।
धनुष तोरि गज घात हति रजक मधुपुरी तौन १०७७
नृप की बन्द छुटाय किन हत्यो कंस को होय ॥
को प्रकट्यो देवकि उदर तुम ब्रज पठये सोय १०७८
को निर्गुण को अलख गति जाको वार न पार ॥
वृथा करत बकि बकि मधुप ब्रज श्रीनन्दकुमार १०७९
जात चरावन धेनु बन नित उठि ग्वालन संग ॥
साँझ समय आवत सदन मुरली मधुर तरंग १०८०
सुनिये ऊधो जिन लख्यो फिरि फिरि मधुपुरि ओर
सुफल जन्म सुख लीजिये ब्रज बसि लाभन थोर १०८१
ऊधो अपने चित धरो कथा प्रेम रस श्याम ॥ ॥

डारि देहु निज निगुण मत नख शिख निरस निकास१०८२
कथा योग भावत हमैं सो ऊधो लख नैन॥
सुमति खोह तन बैठि सुख जो हम भायें बैन१०८३
करो कान सब अंग निज मन कूँ लेहु बटोर॥
तजो ज्ञान अभिमान हम कहैं कथा शिर मोर१०८४
भस्म अंग नहिं अंग ध्वनि करैं न रुंधन श्वास।
जटा शीश धरि वेद पढ़ि अरु पुराण इतिहास१०८५
जग वन्दन वन्दन करैं प्रेम भक्ति चित लाय॥ ॥
नहीं धरैं मन कामना कर्म्म धर्म्म लपटाय१०८६
देखैं हरि छबि रूप ही लगे न नयन निमेष॥
जागत याही योग नित हिय अनुराग विशेष१०८७
पागे रँग रस जानिये सुन्दर सगुण रूप॥ ॥
लगन नयन गुण सैन सों भृकुटी नयन अनूप१०८८
बाजन अनहद नाद सो मुरली ध्वनि पहिचान॥
भोगन भोग सवाद रस यही सुयोग बखान१०८९
रह्यो परम सचुमान मन रुचि रस घूँटन लाय॥
आनँद पद हरि संग सुख वरणत पारन पाय१०९०
मंत्र दियो रति रवन हम ज्ञान भजन गोपाल॥
करैं गुरू अब कौन सुनि फीको मत बेचाल१०९१
बिसरि नेम ह्वै विवश लखि ऊधो ब्रज जन प्रीति॥
नन्द नंदन सरबसु जिन्हें करि बखान धनि रीति१०९२

मैं चररान को दास हूं तुम गुरु परम कृपाल ॥
करि निहाल दे दान रस प्रेम भक्ति गोपाल १०९३
आये ब्रजजन पासही ऊधो सिखवन ज्ञान ॥
प्रेम भक्ति पावन लही मलिन उदास नशान १०९४
गावत गुरा गोपाल के भयो मगन रस प्रेम ॥
लोटि कुंज बिटपन मिलत बिसरि गयो सब नेम १०९५
लखि ब्रज प्रेम बिलास अति ऊधो मगन हुलास ॥
आयो हो दिन दोय कूँ ब्रज बीते षट मास १०९६
तब उपज्यो मन शोचही श्रीमुख वचन संभार ॥
मोहिं बुलायो बेगि हरि सो अति भई अवार १०९७
लीन्हों रथ पलनाय तब ऊधो अति अतुराय ॥
ब्रजजन सुनि ऊधो निकट तुरत हिं आये धाय १०९८
कर जोरें बिनती करत ऊधो शीश नवाय ॥
कृष्णचन्द्र ढिंग जानकी माँगन लग्यो बिदाय १०९९
मैं सेवक श्रीकृष्ण को तैसो आपुन जान ॥
कहे बचन जो कछु तुम्हें भाये श्याम सुजान ११००
जानि आपनो दास मोहिं रहियो परम कृपाल ॥
ब्रज तिय विवश हुलास सुनि ऊधो वचन रसाल ११०१
धनि ऊधो तुम धन्य हो धनिये तुम्हरे बैन ॥
हम निदान जड़ ग्वालिनी तुम सब विधि गुरा ऐन ११०२
होय न शील समान सब लघु दीरघ पहिचान ॥

भृगु ने मारी लात उर श्रीपति भूषण मान ११०३
नख शिख गरल समान जो कहाँ हमारे बोल ॥
मृदुल बचन शीतल कहाँ तुम जो कहत अमोल ११०४
करियो यतन कृपाल ह्वै लहै दरश सुख दैन ॥
बिरह दहन गयो सूख तन देखत हो निज नैन ११०५
घोष बसे की चूक सब धरै न मन ब्रजराय ॥
क्षमा करैं ऊधो जो तुम कहियो अवसर पाय ११०६
ऊधो और कहैं कहा मनमोहन ब्रज राज ॥
बिरद सँभारे आपनो बाँह गहे की लाज ११०७
यही हमारे आश हरि दीनन सदा दयाल ॥
हरिहैं लोचन प्यास हम दरशन देहिं कृपाल ११०८
मगन बिरह सागर सकल ब्रज बनिता यों भाखि ।
आये यशुमति नन्द पै ऊधो शिर पद राखि ११०९
माँगन लगे बिदाय निज ऊधो दोउ कर जोरि ॥
धन्य धन्य सुख गाय कहि तुम समान नहिं ओरि १११०
तुम जो देउ सँदेश सब कहूं श्याम सों जाय ॥
हमरो बिलम अदेश ह्वाँ करत होहिं ब्रजराय ११११
नन्द यशोदा मातु सुनि ऊधो बचन सप्रीति ॥
उमगि प्रेम भरि नयन जल बिलखाने हित रीति १११२
नन्द यशोमति के हृदय उठी बिरह की पीर ॥
कह्यो न जाय सँदेश कछु ढारत नयनन नीर १११३

यसुदा कीजो असीस यह ऊधो कहियो श्याम ॥
चिरजीवहु दोउ लाड़िले मनमोहन बलराम ११.१४
मया कीजियो मात की दोऊ दया के मूल ।
मिलो आय इक बार सुनि मेटि हिये की शूल ११.१५
कह्यो नन्द भरि नयन दे दोहन भरि जो क्षीर ॥
धौरी को यह दूध नित भावत हो हरि हीर ११.१६
दई यशोमति माय सुनि मुरली ललित कन्हाय
ऊधो दीजो जाय जो प्यारी है ब्रज राय ११.१७
करि दराडवत सप्रीति ले ऊधो राखी शीश ॥
चले योग को डोब है गोप सखा ब्रज रीत ११.१८
मन आनन्द बढ़ाय धरि शीश कथा पर जाय
सादर मिले जो मित्र हरि लीन्हो कराठ लगाय ११.१९
रहे बहुत दिन लाय ब्रज कुशल पूंछि घनश्याम ॥
देखे यसुमति नन्द ह्वाँ कौने विधि अभिराम ११.२०
कौन भाँति बीतत तिन्हें मो बिनु दिन औ रात ॥
प्रीति निरंतर गोपिकन कहिये तिन की बात ११.२१
ऊधो सुनि यह बैन है पुलकि गात सब प्रेम ॥
भरि आये दृग नीर जो लख्यो न ब्रज में क्षेम ११.२२
भूल्यो यदुपति नाम सुख कह्यो सुनहु गोपाल ॥
कहि न जाय ब्रज रीति सो कहिये कहा कृपाल ११.२३
तुम प्रभु दीन दयाल जो मो कूं ब्रजहि पठाय ॥

सुफलभयोजग जन्महीं ब्रजजन दरशन पाय ११२४
गयो जो मैं प्रभु ता दिना चरण कमल शिर नाय
साँझसमयवादिनप्रभूपहुँच्योगोकुलजाय ११२५
देख्यो ध्वज रथ दूरि ते लखि रसाल पट पीत ॥
धाये गोपी ग्वाल सब तुम्हें जानि करि मीत ११२६
रथ पर मोहि निहारि पुनि रहे ठगे सब कोय ॥
चल्योदृगनबहुनीरपुनि परेधरणिसुधिखोय ११२७
गई जो आशा टूट लखि भये विकल बेहाल ॥
मानोंसरुझफरयोजोपुनि बिरहघावजंजाल ११२८
तुम बिनुयशुमतिदुखितअति पूँछिकुशलदोउबीर
कृष्ण कृष्ण लागी रटन चातक तृषित जो नीर ११२९
रही ठगोरी खाय हरि तजि गये बिरध जो बेष ॥
सुतहितदशरथप्राणतजिहूं निरभाग विशेष ११३०
दीन यशोदा माय यों दुखित रावरे हेत ॥
करिव्यतीतनिशिगायगुणनन्दहु विकलसमेत ११३१
नहिं सुहाय तुम बिनु कछु बोधे मैं बहु भाँति ॥
लखितिनकीगतिहौंरहीयुगसमानमोहिंराति ११३२
नँद आयसु वृषभानपुर गयो नाथ उठि प्रात ॥
सुनिआईंसबधायतजिकामधाम अतुरात ११३३
पूँछि कुशल गद गद बचन भरे प्रेम जल नैन ॥
भयो तमारो तियन को सुन सँदेह नहिं चैन ११३४

दूषरा कुबजा लाय उर कियो परेखो नाथ ॥
सकलप्रेम परबीन अति कहि न जाय गुरा गाथ ११३५
कह्यो कहानी है सकल ज्ञान पन्थ हरि बैन ॥
लाख कह्यो उन एक दृढ़ ब्रत श्री पति सुखदैन ११३६
मेटि वेद बिधि नीति उन गही गहन इक गूढ़ ॥
नटवर वपु गोपाल छबि भई हृदय आरूढ़ ११३७
नहिं सीखे कोउ आन बिधि जो विधि जाय सिखाय
जाउ वहाँ जानी परे चतुर शिरोमणि राय ११३८
गयो चौकरी भूलि निज भयो चकित तजि ऊर ॥
कहा सिखाऊं योग उन पटके मो शिर धूर ११३९
भई अग्नि घृत जिमि सबै सुनि श्रवरान मो बैन ।
जाँची कौन काँची नहीं साँची तिय गुरा ऐन ११४०
चातक जिमि दृढ़ पैज उन सगुरा प्रेम रस लीन ॥
नहीं रोग जिन को प्रभु तहाँ बैद्य कह कीन ११४१
श्याम राम सुख धाम नित जिन्हें रैन दिन ध्यान ॥
सरस भजन लखि तिन्हन को लागत फीको ज्ञान ११४२
खोज लख्यो षट मास ब्रज घर घर रीति समान ॥
प्रेम प्रीति प्रति श्वास जिमि कुरु क्षेत्र धन दान ११४३
वहीं रह्यो जो लुभाय मन लखि उन की हित रीत ॥
भूलि सुरति निज आप की गये मास षट बीत ११४४
प्रभु सों आवन अवधि बधि बेगि हि पुनि ब्रज माहीं

उन सँग उन सो ह्वै गयो रही सुरति कछु नाहिं ११४५
बीत चुके षट मास ही समुझि परी जब मोंहि॥
बिना कहे उठि भाजि चलि जबै त्रास जिय जोहि ११४६
ऐसे मोहिं हृदय अधिक करत शोच यह शाल।
करुणासिन्धु अगाध तुम दीनानाथ दयाल ११४७
निठुराई क्यों मन धरें तोहिं न बिरद सँभार॥
कौन सहायक दीन को निठुर निबाहनहार ११४८
पूरित सब सुख साज ही करत हैं निगम बखान॥
ब्रजसुदृष्टि सुख दीजिये मानि बिरद की कान ११४९
तुम बियोग तन क्षीण हैं ब्रज बासी नर नारि॥
रहत लीन घनश्याम तन चातक रटन पुकारि ११५०
गति वृषभानु कुमारि की कहूं सो कहिय न जाय।
बिरह ब्यथा बाधा अधिक भोगत काल बिताय ११५१
अवधि आश घट प्राण हैं जिमि तृण अग्र कनोस
क्यों करि तुम्हें सुहाय हरि हों जिय रहत मसोस ११५२
दीजिये दरशन जाय हरि हरिये दुःख कृपाल।
मरत हैं व्याकुल ब्रज सकल करिये तिन्हें निहाल ११५३
कह्यो यशोमति बिलखि अति मुरली दे मो हाथ॥
नन्दराय हित मानि पुनि ब्रज आवें ब्रजनाथ ११५४
जिन गैयन कों श्याम बन हित करि रहे चराय॥
ते कुंजन बिडरी फिरत धाम नहीं पुनि आय ११५५

सुनि ऊधो के बैन हरि उमगि प्रेम भरि नैन ॥
शालीउर ब्रज भीतिही बिवश श्याम सुखदैन ११५६
मुरली लै हिरदय धरि मगन भये ब्रज ध्यान ॥
भरिउशासहा ब्रज कह्यो पोंछित आशबहान ११५७
भले सखा तुम कीन्हयों बोलि कह्यो नँदलाल।
दे आये ब्रज जनन कों भलीसीरव की चाल ११५८
मिलि ब्रज जन मन साथ ही रहे ब्रज हि ब्रजनाथ
सुरन काज हित नाम कूं यदुबंशिन के साथ ११५९
सदा श्याम ब्रज में बसें साजें नटवर साज ॥
कोटिकाम लावराय निधि अधर मुरलिका बाज ११६०
राजें नित ब्रज राज ब्रज ब्रजबासिन सुख देहिं ॥
प्रेम रूप ब्रज बाम नित नित समीप सुख लेहिं ११६१
नित नव बनहिं बिहार ब्रज नित सुख नवल विलास
शोभा अपरम्पार नित वृन्दाबन रस राज ॥ ११६२
ध्यावैं ध्यान लगाय जेहिं सनकादिक अरु शेश।
सुर नर मुनि अति भाव हित चितवैं शंभु महेश ११६३
ब्रह्मा सनके धाम की सुनहु बात चित लाय॥
गाई अति अभिराम ब्रज गोपिन महत बड़ाय ११६४
महि पावन वृन्दाबिपिन परसि चरण की धूर।
सो गति गोपिन की लहैं धन्य भागि को पूर ११६५
ऐसे बिधि महिमा अमित गोपिन गाय सुनाय॥

पावन ब्रह्द पुराण में वेदव्यास समुझाय ११६६
ब्रजविलास ब्रजराज को कहि किन पायो पार ॥
भक्ति भाव हरिजनन को सरस भजन सुखसार ११६७

ग्रन्थ की समाप्ति ॥

मन अनन्द हुलसत हियो भई पूर यह आश ॥
ब्रज विलास सारावली कृत गोवर्द्धन दास ११६८
पढ़ी न विद्या काव्य की लख्यो न कोऊ ग्रन्थ ॥
सुमिरण हरि हरिजनन को पायो सूधो पन्थ ११६९
बलिहारी हरि जनन की जिन के नाम प्रताप ॥
गायो यश ब्रजराय को सुखद हरण भव ताप ११७०
हरिजन हरि दोउ एक ही सदा दीन हितकार
सेतु सहार पिपील जिमि लँघ्यो सिन्धु के पार ११७१
भक्ति भाव वाणी विमल सुनै सदा हरि दास ॥
गावैं श्री गोपाल गुण नख शिख सुख की रास ११७२
भूल चूक जो लखि परे ले हैं आप सुधार ॥
सुमिरि कृष्ण के नाम को विनवत बारम्बार ११७३

इति श्री ब्रज विलास सारावली गोवर्द्धन दास
वल्लभी वैष्णव कृता सम्पूर्णा ॥

इति



विज्ञापन

प्रकट हो कि हमारे कारख़ाने में रामायण तुलसी कृत (विशालदरशी) नाम से अति पुष्ट अक्षरव स्वच्छ काग़ज़ पर अति उत्तमता से छपी हुई मौजूद है आज तक ऐसी रामायण हिन्दुस्तान में किसी कारख़ाने में नहीं छपी है इसकी प्रशंसा हम नहीं करसक्ते जब आप लोग मँगाकर ख़ुद अवलोकन करैंगे तब प्रसन्नता को प्राप्त होंगे इसलिये आप लोगों से यह प्रार्थना है कि एक एक पुस्तक रामायण विशालदरशी को लेकर अवलोकन कीजिये और अपने जन्म को सुफल कीजिये और यह रामायण अलग अलग काण्ड भी मिल सक्ती हैं-

द॰ मनेज़र
अवध अख़बार.

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
नाई बुजह्विद्	तथा- सिर्फ़ बालकाराड	रामायरारामविलास
रामायरातुलसीकृतशुद	कलां-	खुलासासातोंकाराडरा
का छापाटैपकाग़ज़शु-	तथा- अयोध्याकाराड	मायरावाल्मीकी-
न्दामय रामाश्वमेध आ-	तथा- आरग्यकाराड-	रामायरातुलसीकृत-
ठकाराड ख़ास-	तथा- सुन्दर काराड-	मानसप्रचारिका-
रामायरातुलसीकृतटी	तथा- लंकाकाराड-	रामायराकवितावली
कासुखदेवजी किताब	रामायरा अध्यात्म वि-	मूल-
खुमा काग़ज़ हिनाईशु-	चार सातों काराड पंडि-	तथा- मयटीकाबैजना
न्दा दो जिल्दमें कलां-	त यमुनाशंकार-	थजी-
तथा- काग़ज़ रस्मी स-	तथा- सिर्फ़ बालकांड-	रामायरागीतावलीमू
फ़ेद कलां-	तथा- आररायकाराड	तथा-मयटीकाबैजना-
तथा- पत्रानुमावातस	तथा- किष्किन्धाकांड	थजी-
वीर हिनाई-	तथा- सुन्दरकाराड-	रामायरामानसदीपिका
रामायरावाल्मीकीभा-	तथा- लंकाकाराड-	उभयप्रबोधरामायरा
षा वार्त्तिक काग़ज़ सफ़े	तथा- उत्तरकाराड	सातोंकाराडछन्दोंमें-
द शुन्दा-	लंकाकाराडरामायरा	श्यामरामायरासुंतख़ि
तथा- काग़ज़ रस्मी-	मय मानस दीपिका व	बरामायरादोहाचौपा-
तथा- सिर्फ़ किष्किन्धा	टीकासमाधानकोषम	ई में-
काराड अलाहिदा-	य तसवीर-	रामायरारामनिवाससा
तथा- सिर्फउत्तरकांड-	विजयराघवखराड आ	तोंकांड मय रासाश्वमेध
रामायरातुलसीकृत टी	ल्हा यानी आल्हारामा	छन्दों में-
का रामचररादास किता	यरा बालकाराड	अवध बिलासरामायरा
बनुमा दो जिल्दमें रस्मी	तथा- अयोध्याकांड	छन्दरामायरा-
सफ़ेद-	तथा- आरराय काराड	अद्भुत रामायरा-
तथा- काग़ज़शुन्दास-	तथा- सुन्दरकाराड-	श्रीपदवन्दरामायरा
फ़ेद-	तथा- किष्किन्धाकांड	अध्यात्मरामायरामय
तथा- पत्रानुमा-	तथा- लंकाकाराड-	टीका बैजनाथजीकलां-
रामायरातुलसीकृतटी-	तथा- उत्तर काराड-	विनयपत्रिका मूल-
का बैजनाथ सातोंकांड	गीत रामायरा-	तथा- मयटीकाबैजना
कलां-	कुंडलियारामायरासटी-	थजी कलां-

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
तथा-मयटीकाशिवप्र	प्रपन्नामृत मुसन्निफ़ै मुं	क़लम काग़ज़ हिनाई
काशकाग़ज़ सफ़ेद-	शी लालजी डिप्टीकल-	रस्मी कलां-
तथा- काग़ज़ फ़ारबाई-	क्टर-	तथा- विलातसवीर-
तुलसी सतसई मूल-	पुराण भाषा	काग़ज़ सफ़ेद रस्मीसा-
तथा- मयटीकावैजना-	देवीभागवतपूरातर्ज़ुमा	धारण हरूफ़ कलां-
थजी-	कलां-	गणेशपुराणभाषाक०
तथा- मयटीकाकामता	पद्मपुराणतर्ज़ुमाभाषा	लिंगपुराण-
शरण-	सृष्टिखण्डवभूमिखंड	बृहन्नारदीयपुराणमत
सतसई बिहारीलाल-	कलां-	बूअासन् १८८७ ई०
रामचन्द्रिकासटीक-	तथा- तर्ज़ुमास्वर्गखंड	तथा- मतबूआ सं०१८६२
रामाश्वमेधवार्त्तिकभाषा	कलां-	श्रीवाराहपुराणउत्तरा-
तथा- दोहाचौपाईमें-	तथा- पातालखंडक०	र्द्धव पूर्वार्द्ध-
श्रीरामविवाहोत्सव-	रामायणरामानुराग	वामनपुराण-
सीतावनवास-	वली-	नृसिंहपुराण-
अध्यात्मरामायणमय	मत्स्यपुराणमयतर्ज़ुमा	जैमिनिपुराण-
टीकाभाषामुतरज्जिमा	देशीभाषाकलां-	आदिब्रह्मपुराण
पण्डितउमादत्तजीशास्त्री	विष्णुपुराणवार्त्तिक	शिवपुराणमयभूमिका
व्रजविलासबातसवीर	भाषाकलां-	वार्त्तिकविस्तारसहित-
दोहाचौपाईमेंख़ास-	तथा- दोहाचौपाईमें-	तथा- दोहाचौपाईमेंइ
व्रजविलासकवितावली	सुखसागरतर्ज़ुमा श्रीम	ख़्तिसारकेसाथबहुतउ
रामायणविशालरख़ी	द्भागवत जलीक़लमबा	म्दा-
तुलसीकृतबातसवीरनि	तसवीरकाग़ज़ सफ़ेद	भविष्यपुराण-
हायतजली क़लमकलां-	चिकनादोजिल्दमेंकलां	स्कन्दपुराण-
गर्गसंहिताख़ास-	तथा- काग़ज़ हिनाईमुं-	गारुड़पुराणमयटीका
कथासत्यनारायणमय	सुखसागरछापाटैपमुत	भाषापत्रानुभाख़ास
टीकाभाषा-	वस्सित क़लम काग़ज़	तर्ज़ुमा इतिहाससमु-
दुर्गायनवकाण्ड-	सफ़ेद गुन्दा व हिनाईमु	च्चय-
सरित्सागरमुसन्निफ़ै	न्दा बा तसवीर काग़ज़	प्रेमगंगतरंग-
सोमदेवभट्टमयटीका	रंगीन कलां-	ब्रह्मोत्तरखण्ड-
भाषा-	सुखसागरमुतवस्सित	सूर्य्यपुराणनागरी-